तिरुमल तिरुपति देवस्थान

सप्तगिरि

आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

SAPTHAGIRI (HINDI)
SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY
Volume:55, Issue: 08
January - 2025, Price Rs.20/-,
No. of pages-56.

जनवरी-2025

रु.20/-

वैकुंठ एकादशी

दि.10-01-2025

मत्पादौ शरणं व्रजेति चरणौ संसारसिन्धुस्तदा
जानुं संस्पृशतीति जानुमपि पाणिभ्यांस्वयं दर्शयन्।
शेषाद्रौ जगतोऽस्य रक्षणधियाऽतिष्ठद्दयासागरः
सश्रेयांसि चतुर्भुजः कलयतां श्री श्रीनिवासः प्रभुः।।

दि. 28-11-2024 से दि. 06-12-2024 तक तिरुचानूर, श्री पद्मावती देवी का ब्रह्मोत्सव अत्यंत धूम-धाम से संपन्न किया है। इस संदर्भ में दि. 28-11-2024 को आं.प्र. धर्मस्व शाखा के माननीय मंत्रीजी श्री आनं रामनारायण रेड्डीजी ने देवी माँ को पवित्र रेशमी वस्त्र समर्पित किया। इस कार्यक्रम में ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अध्यक्ष श्री बी.आर.नायडू और बोर्ड सदस्य, ति.ति.दे. के ई.ओ. श्री जे.श्यामला राव, आई.ए.एस., अतिरिक्त कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री सीएच.वेंकय्या चौदरी, आई.आर.एस., जे.ई.ओ. श्री वी.वीरब्रह्मम्, आई.ए.एस., जे.ई.ओ. श्रीमती एम.गौतमी, आई.ए.एस., और अन्य अधिकारिगण ने भाग लिया।

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही॥
(- श्रीमद्भगवद्गीता - सांख्ययोग २-२२)

जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्यागकर दूसरे नये वस्त्रों को ग्रहण करता है, वैसे ही जीवात्मा पुराने शरीरों को त्याग कर दूसरे नये शरीरों को प्राप्त होता है।

इतनिकंटे मरि दैवमु गानमु येक्कड वेदकिन नितडे
अतिशयमगु महिमलतो वेलसेनु अन्निटिकाधारमु दाने ॥इतनि॥

मदि जलधुलनोक दैवमु वेदकिन मत्स्यावतारं बितडु
अदिवो पातालमंदु वेदकिते नादिकूर्ममीविष्णुडु
पोदिगोनि अडवुल वेदिकि चूचिते भूवराहमनि कंटिमि
चेदरक कोंडल गुहल वेदकिते श्रीनरसिंहुडुन्नाडु ॥इतनि॥

तेलिसि भूनभोंतरमनु वेदकिन त्रिविक्रमाकृति निलचिनदि
पलुवीरुललो वेदकिचूचिते परशुरामुडोकडैनाडु
तलपुन शिवुडुन पार्वति वेदकिन तारक ब्रह्ममु राघवुडु
केलकुल नावुल मंदलवेदकिन कृष्णुडु रामुडुनैनारु ॥इतनि॥

पोंसि यसुरकांतललो वेदकिन बुद्धावतारंबैनाडु
मिंचिन कालमु कडपट वेदिकिन नंतर्यामै मेरसेनु
येंचुक इहमुन बरमुन वेदकिन ईतडे श्रीवेंकटविभुडु ॥इतनि॥

दशावतारों के रूप में श्री वेंकटेश की सर्वव्यापकता को निर्धारित करके सारे संसार का आधार वही भगवान कहा गया है। जलनिधियों में मत्स्यावतार, पाताल में कूर्म, काननों में भूवराह तथा गुफाओं में श्री नारसिंह के रूप में उन्हें श्री वेंकटेश के दर्शन हुए हैं। भूनाथ तथा आकाश में त्रिविक्रम, योद्धाओं में परशुराम, विश-पार्वती के मनों में श्रीराम तथा गोवृन्दों में श्रीकृष्ण – ये सभी वेंकटगिरि के ही रूप हैं। बुद्धावतार से संबंधित एक उत्सुकतापूर्ण अंश इसमें उल्लिखित है। अतिभयंकर त्रिपुरासुरों का संहार करना, महाविष्णु को बहुत भारी पडा। इसका कारण है - उनकी पत्नियों के पातिव्रत्य की महिमा। निस्संतान उन पतिव्रताओं को संतान दिलाने का वचन देकर, उन्हें बुद्ध के रूप में (कपट वटु) विष्णु एक पीपल के पेड के पास ले आते हैं। इस वृक्ष का आलिंगन करने से उसको संतान की प्राप्ति होगी' - बालक की बातें सुनकर, वे सुहागिनियाँ यह सोचकर वृक्ष से लिपट जाती हैं कि वृक्ष से लिपट जाने से इनका व्रत भंग नहीं होगा। लेकिन उस समय उस पेड में साक्षात् श्री महाविष्णु के होने के कारण उनका 'व्रत भंग' हो जाता है। (तत्त्वोपहार- श्री नल्लान चक्रवर्तुल रघुनाथाचार्य पृष्ठ १५६) परिणामतया त्रिपुरासुरों का संहरण सुगम हो जाता है। अन्नमय्या के बाद बुद्धावतार का यह वर्णन श्रीकृष्णदेवरायलु की रचना आमुक्तमाल्यदा में मिलता है।

संकीर्तना सौजन्य - ति.ति.दे. प्रकाशक, अन्नमाचार्य गीत-माधुरी, डॉ.पी.नागपद्मिनी

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

श्री वेंकटेश्वर अन्नप्रसाद ट्रस्ट

तिरुमल, तिरुचानूर में हजारों की संख्या में भक्तों को प्रतिदिन अन्नप्रसाद वितरण की बात भक्तों को विदित ही है। अब ति.ति.दे. अन्नप्रसाद ट्रस्ट भक्तों, दाताओं को दान देने का अवसर देना चाहता है। इसलिए एक दिन दान की योजना प्रवेश कर रहा है।

एक रोजाना खर्च -

1. एक दिन - 44 लाख
2. अल्पाहार - 10 लाख
3. मध्याह्न भोजन - 17 लाख
4. रात्रि भोजन - 17 लाख

तिरुमल तिरुपति देवस्थानों का अन्नदान ट्रस्ट इस नकद को दाताओं से स्वीकार करने के लिए सिद्ध हो रहा है। दाताओं - व्यक्तियों/कंपनियों/संस्थाओं/ट्रस्टों/संयुक्त ढंग से भी इस ट्रस्ट को दान दे सकते है। 44 लाख दान देने वाले दाताओं को 25 लाख दान देने वाले दाताओं की सुविधाएँ प्रदान की जाएगी। अल्पाहार, मध्याह्न भोजन, रात्रि भोजन का दान देने वाली दाताओं को, 10 लाख दान देने वाले दाताओं की सुविधाएँ प्रदान की जाएगी।

अपनी मर्जी के अनुसार सूचित एक दिन पर अन्नदान कर सकती है।
और दाता का नाम भी अन्नदान केंद्र में डिसूप्ले होता है।

अन्य विवरण के लिए संपर्क करें -
उप कार्यकारी अधिकारी (डोनार सेल), आदिशेषु विश्रांति भवन, ति.ति.दे., तिरुमल।
वेबसाइट - cdmc.ttd@tirumala.org / dyeodonorcell.ttd@tirumala.org
दूरभाषा - 0877-2263001 (24X7), 0877-2263472 (कार्यालय समय में)
(सूचना - उपर्युक्त विषयों पर परिवर्तन होने की संभावना है।)

सप्तगिरि

तिरुमल तिरुपति देवस्थान की
आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन।
वेंङ्कटेश समो देवो न भूतो न भविष्यति।।

वर्ष-55 जनवरी-2025 अंक-08

विषयसूची

वैकुंठ एकादशी	डॉ.रमेश कृष्णा	07
तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर (तिरुपति बालाजी)	प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव प्रो.गोपाल शर्मा	12
संक्रांति	डॉ.एस.हरि	15
श्री वेंकटाचल की महिमा	आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी	18
ब्रह्म मुहूर्त	डॉ.एच.एन.गौरीराव	22
श्री रामानुज नूट्रन्दादि	श्री श्रीराम मालपाणी	26
महर्षि दधीचि	डॉ.जी.सुजाता	31
श्रीवैष्णव दिव्यदेश-108	श्रीमती विजया कमलकिशोर तापडिया	34
अंजनादेवी	डॉ.के.एम.भवानी	38
''अंत में 5वा अंक होने पर वर्गों को पहचानना''	डॉ.वड्डी जगदीश	40
कीवी फल	डॉ.सुमा जोषि	43
आइये, संस्कृत सीखेंगे..!!!	श्री अवधेष कुमार शर्मा	46
जनवरी महीने का राशिफल	डॉ.केशव मिश्र	47
नीतिकथा - विवेक का बल	श्री के.रामनाथन	48
चित्रकथा - दक्षिण का मुख्य पर्व-संक्रांति	डॉ.एम.रजनी	50
क्विज - 30		52

website: www.tirumala.org वेबसैट के द्वारा सप्तगिरि पढ़ने की सुविधा पाठकों को दी जाती है।
सूचना, सुझाव, शिकायतों के लिए - sapthagiri.helpdesk@tirumala.org

मुखचित्र - श्री वेंकटेश्वरस्वामी, तिरुमल।
चौथा कवर पृष्ठ - श्री पद्मावती देवी, तिरुचानूर।

गौरव संपादक
श्री जे.श्यामला राव, आई.ए.एस.,
कार्यनिर्वहणाधिकारी, ति.ति.दे.

प्रधान संपादक
डॉ.के.राधारमण,
M.A., M.Phil., Ph.D.,
P.G. Dip. in Ephigraphy, Dip. in Yoga

संपादक
डॉ.वी.जी.चोक्कलिंगम

उपसंपादक
श्रीमती एन.मनोरमा

मुद्रक
श्री पी.रामराजु
विशेष अधिकारी,
पुस्तक बिक्री केंद्र & मुद्रणालय,
ति.ति.दे., तिरुपति।

स्थिरचित्र
श्री पी.एन.शेखर, मुख्य-फोटोग्राफर, ति.ति.दे., तिरुपति।
श्री बी.वेंकटरमण, सहायक छायाचित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

एक प्रति .. रु.20-00
वार्षिक चंदा .. रु.240-00
जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) .. रु.2,400-00
विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा .. रु.1,030-00

अन्य विवरण के लिए
CHIEF EDITOR, SAPTHAGIRI, TIRUPATI - 517 507.
Ph.0877-2264543, 2264359, Editor - 2264360.

सूचना
मुद्रित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक के हैं। उनके लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं।

संपादकीय

तिरुमल में धनुर्मासोत्सव

कहा जाता है कि हर एक की अपनी-अपनी महानता है, लेकिन अगस्त्य ऋषि की ऊँचाई की अपनी ही अलग महानता है वैसे ही ब्रह्मांडभांडों में सभी ब्रह्मांड एक ऊँचाई हैं, श्रीवेंकटाचलक्षेत्र जहाँ सप्तगिरि चमक रहे हैं उसकी अपनी अलग पहचान है। क्योंकि यह कहावत सदैव सत्य है। वेंकटाचल के हर एक परमाणु हरकदम पर एक पवित्रता, एक चमत्कार दिखाई देता है। चाहे वह इस दिव्य स्थान में श्री वेंकटेश्वर स्वामी के लिए आयोजित उत्सव हों, जुलूस, निवेदन या पहाड़ों की ढलानों पर स्थित तीर्थों की महिमा, श्रीनिवास की उपस्थित में जो कुछ भी जांच की जाती है, उस सभी में एक विशिष्टता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। एक विलक्षणता उभरती है। विशेष रूप से, धनुर्मासोत्सव का पालन करना पर्याप्त है, जो हर साल 15 दिसंबर से 14 जनवरी तक एक महीने के लिए तिरुमल क्षेत्र में आयोजत किया जाता है। यह इस क्षेत्र का विशिष्टता है।

इस धनुर्मास के दौरान, जो मार्गशीर्ष-पुष्यमास के एक महीन के लिए, श्रीनिवास को भगवान कृष्ण और वक्षस्थल व्यूहलक्ष्मी को गोदादेवी के रूप में माना जाता है, और स्वामी की छाती में रत्नों से जड़ित एक सुनहरा तोता सजाया जाता है। रात की एकांत सेवा में भोगश्रीनिवास मूर्ति की जगह नवनीतगोपालकृष्ण की पूजा की जाती है। श्री वेंकटेश्वर सुप्रभात स्तोत्रावली के स्थान पर श्रीगोदादेवी तिरुप्पावै पाशुरों को पाठ किया जाता है। तब श्रीस्वामी को बिल्व दलों के साथ तुलसी के स्थान पर सहस्रनामों से उनकी पूजा करते हैं। धनुर्मास की पूर्णिमा से पहले आनेवाली वैकुंठ एकादशी और उसके अगले दिन आने वाली मुक्कोटी द्वादशी सबसे ख्याति होती है। वैकुंठ एकादशी के दिन सुबह से शुरू करके 10 दिनों तक भगवान वैकुंठ द्वार दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त होता है। उस दिन सुबह के समय आयोजित होने वाले श्रीहरि स्वर्णरथोत्सव का वर्णन करने के लिए कोई शब्द नहीं है! अगले दिन मुक्कोटी द्वादशी पर श्री स्वामिपुष्करिणीतीर्थ मुक्कोटी है। इस दिन सूर्योदय से पहले पुष्करिणी में श्रीहरि चक्रस्नानम किया जाता है। उस समय ब्रह्मांड के सभी तीर्थ श्री स्वामिपुष्करिणी में निक्षिप्त होते है। उस समय में डुबकी लगाने वाले भक्तगण सभी पापों से मुक्त हो जाते हैं। यही इस क्षेत्र की महिमा है! ऐसा परम पवित्र स्वामिपुष्करिणी में स्नान सभी पापों को हरनेवाला और सभी सिद्धियों को प्रदान करने वाला है पवित्र पुण्यतीर्थ है।

वैकुंठ एकादशी की ठीक छठे दिन तिरुमल में होने वाला रसपूर्ण उत्सव है 'प्रणयकलहोत्सव' शिकार या व्यायाम के दौरान बाहर जाकर लौटे श्रीस्वामी को रोकते हुए, श्रीदेवी और भूदेवी उनसे मजाकिया और प्रेमपूर्ण शिकायत करती हैं, जैसे, ''कहाँ-कहाँ गए, किस-किसके साथ घूमकर आए?'' यह उत्सव अत्यंत रोचक और रसपूर्ण होता है। एक और विशेष बात यह है कि वैकुंठ एकादशी के दस दिन पहले से शुरू होकर, इसके बाद पंद्रह दिनों तक प्रतिदिन शाम को श्रीहरि सन्निधि में, श्री जीयंगारों द्वारा किए जाने वाले पाशुर पारायणम के मधुर गायन के साथ यह अद्भुत पूजा प्रक्रिया है। धनुर्मास के अंत में आने वाला एक और बहुत महत्वपूर्ण त्योहार है, मकर संक्रांति। इस त्योहार के एक दिन पहले भोगी का त्योहार मनाया जाता है, जिसमें श्रीहरि को भोग लगाया जाता है। संक्रांति के अगले दिन कनुमा का त्योहार है, जिस दिन सुबह श्रीहरि के मंदिर में श्रीगोदाकल्याण बहुत धूमधाम से मनाया जाता है। कनुमा की शाम को, एक पालकी में भगवान श्री कृष्णस्वामी के साथ आ जाती है, और दूसरी पालकी में पांच हथियार धारण किए हुए श्री स्वामी जी भक्तों की भीड़ के साथ वेंकटपर्वत की तलहटी में शिकार के लिए निकलते हैं। फिर वे विजय यात्रा पूरी करके मंदिर वापस आते हैं। यह उत्सव ही 'पारुवेटा उत्सव' भक्तों के मन को आनंद के अमृत सागर में डुबा देने वाला, अद्वितीय सातपहाडों वाले स्वामी जी का यह अद्भुत उत्सव है! ऐसे अनेक उत्सव होते हैं। इस तरह श्री वेंकटाचल क्षेत्र कई तरीकों से प्रसिद्ध है।

वैकुंठ एकादशी

-डॉ.रमेश कृष्णा

भारतीय सनातन धर्म में कई सारे व्रत रखे जाते हैं और त्योहार मनाए जाते हैं। साधारणतया व्रत निष्ठा पूर्वक किए जाने वाले होते हैं और त्योहार उत्साह के साथ मनाए जाने वाले होते हैं।

कुछ ऐसे भी व्रत एवं त्योहार हैं जहाँ निष्ठा पूर्वक व्रत भी किया जाता है और उत्साह के साथ त्योहार भी मनाया जाता है।

ऐसे व्रत एवं त्योहार में नवरात्रि व्रत के साथ 'दशहरा' का त्यौहार और व्रतों में 'वैकुंठ एकादशी' के नाम से प्रख्यात त्योहार भी शामिल है।

सनातन धर्म में एकादशी व्रत सबसे महत्वपूर्ण स्थान रखता है। आमतौर पर भगवान विष्णु के संबंध में यह व्रत रखा जाने पर भी अन्य कई देवताओं के उपासक भी इस एकादशी व्रत को मनाते रहते हैं।

चंद्रमा की गति के अनुसार महीने की गिनती होने पर हर महीने के दो पखवाड़े होते है और हर एक पखवाड़े के 11वें दिन को एक बार एकादशी व्रत होता है। यानी अमावास्या और फिर पूर्णिमा के बाद 11वें दिन को एकादशी व्रत मनाया जाता है। इस प्रकार एक महीने में दो बार और एक साल में 24 बार एकादशी व्रत मनाया जाता है।

पद्मपुराण में बतायी गयी एक कहानी के अनुसार एकादशी व्रत का प्रारंभ है सत्ययुग या कृतयुग में ही हुआ था। श्री महाविष्णु ने देवताओं की प्रार्थना पर मुर नामक दानव का वध करने के लिए 1000 साल तक उससे युद्ध किया। लेकिन वह दानव मुर को न मार सके। बहुत लम्बे समय तक चले उस युद्ध में थके जाने पर श्री महाविष्णु ने एक गुफा में जाकर कुछ देर के लिए आराम करने को सोचा। उस समय दानव मुर ने यह पहचान कर आराम ले रहे श्री महाविष्णु का वध करने के लिए उस गुफा में पहुँचा। उसी समय श्री महाविष्णु के दिव्य देह से उनके दस इन्द्रियों और मन के अंश से एक महान सौंदर्यवती स्त्री बाहर आई और मुरासुर से युद्ध करके अपनी तलवार से उसे काट डाला। उसके साथ यह युद्ध 11 दिन चला तो उसी समय श्री महाविष्णु अपनी योग निद्रा से उठे और अपने दिव्य देह से आविर्भूत उस सुंदरी के पराक्रम से प्रसन्न होकर उससे एक वर मांगने को कहा। तब उस सुंदरी ने कहा कि आज से मैं 'एकादशी' के नाम से पुकारा जाऊं और आपके सभी भक्त इस 11वें दिन पर उपवास रखते हुए आपका भजन करते रहे और जो भी निष्ठा पूर्वक यह उपवास करेगा उसको मोक्ष प्राप्ति हो जाए। भगवान विष्णु ने प्रसन्नतापूर्वक उसे वह वर दिया क्योंकि उसमें एकादशी की कोई स्वार्थ भावना नहीं थी और सारे संसार का उद्धार करने के लिए उसने यह वर मांगा। उस समय से यह एकादशी व्रत चला आ रहा है।

आध्यात्मिक रूप से एकादशी शब्द का अर्थ होता है अपने इंद्रियों और मन को सांसारिक क्रियाकलापों से दूर रखकर भगवान की ओर मोड़ना। इस प्रकार एकादशी यानी ग्यारह अंगों को भगवान को समर्पित करना एकादशी व्रत का परम उद्देश्य होता है। एकादशी के दिन पर उपवास रखना सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है। लौकिक और अलौकिक दोनों रूपों में एकादशी सभी के लिए वांछित लाभदायक व्रत है। उपवास रखने का अर्थ सिर्फ खाना पीना छोड़ना नहीं बल्कि भगवान का कीर्तन भजन करना भी है। ''उप'' का अर्थ होता है 'समीप' और ''वास'' का अर्थ होता है 'रहना' - यानी अपने लौकिक लम्पटों से दूर होकर भगवान के समीप रहने का निष्ठा पूर्वक आचरण जो है वही उपवास कहलाया जाता है।

यह उपवास कई रूपों में किया जाता है। निर्जल उपवास के नाम से कुछ लोग पानी तक छूते नहीं। सजल उपवास के नाम से कुछ लोग पानी और फलों के रस लेते हैं और फलहारी एकादशी के नाम से कुछ लोग दूध और फल खाते हैं। कुछ लोग आटा चावल आदि न खाकर ऐसे बीजों से या दाने से कुछ खिचड़ी जैसा बना कर खाते हैं जो उगते नहीं। इनमें सबसे प्रधान है साबूदाना की खिचड़ी। इस प्रकार तरह-तरह रूपों में अपनी-अपनी शक्ति और सामर्थ्य के अनुसार एकादशी उपवास रखते हैं। तरीका जो भी हो लेकिन प्रधान उद्देश्य तो यह पूरा दिन भगवान को समर्पित करना है।

शुक्ल पक्ष की अवधि में एक बार और कृष्ण पक्ष की अवधि में एक बार 11वीं तिथि

को मनाया जाने वाला यह व्रत सबसे महत्वपूर्ण व्रतों में गिना जाता है। अपने अस्थिर मन को नियंत्रित करने में एकादशी व्रत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। खुशी की मृगतृष्णा के लिए भौतिकवादी दुनिया के पीछे भागने के बजाय शांतिपूर्ण, आनंदित और आध्यात्मिक जीवन की ओर एक रास्ता दिखाने में एकादशी व्रत बहुत महत्वपूर्ण है। आधुनिक विज्ञान के अनुसार चंद्र के परिभ्रमण के 11वें दिन पर सभी ग्रह एक निश्चित स्थिति में आ जाते हैं और इस दिन पर उपवास करने से स्वास्थ्य और आध्यात्मिक विकास के लिए अनुकूल वातावरण मिलता है।

एक वर्ष में कुल मिलाकर 24 एकादशी मनाई जाती हैं जो भगवान विष्णु के विभिन्न अवतारों से जुड़े हुए हैं। प्रत्येक उपवास के दौरान अपने-अपने प्रांतों के अनुसार कुछ खाद्य नियम भी होते हैं जिनका पालन करने से सात्विक मन का विकास होता है और भगवान के पास पहुँचने के लिए मार्ग आसान बन जाता है। चैत्र मास में भगवान श्रीरामचंद्र को याद करते हुए 'पाप विमोचन एकादशी' और 'कामदा एकादशी' मनाई जाती है जिनके नाम से ही यह स्पष्ट होता है कि यह हमारे पापों को दूर करके माँगी हुई इच्छाओं को पूरा करने में मददगार होते हैं। वैशाख मास में भगवान मधुसूदन का स्मरण करते हुए 'वरुथिनी एकादशी' और 'मोहिनी एकादशी' मनाई जाती हैं। ज्येष्ठ मास में भगवान त्रिविक्रम को ध्यान करते हुए 'अपरा एकादशी' और 'निर्जल एकादशी' मनायी जाती हैं। आषाढ़ मास में भगवान वामन जी को स्मरण करते हुए 'योगिनी एकादशी' और 'शयनी एकादशी' मनाई जाती हैं। वैसे ही श्रावण मास में भगवान श्रीधर को स्मरण करते हुए 'कामिका एकादशी' और 'पुत्रदा एकादशी' मनायी जाती हैं। भाद्रपद मास में भगवान हृषीकेश को याद करते हुए 'अन्नदा एकादशी' और 'पार्श्व एकादशी' मनाई जाती हैं। अश्विनी मास में भगवान पद्मनाभ का स्मरण करते हुए 'इंदिरा एकादशी' और 'पाशंकुशा एकादशी' मनाई जाती हैं। कार्तिक मास में भगवान दामोदर जी को समर्पित करते हुए 'रमा एकादशी' और 'प्रबोधिनी एकादशी' मनाई जाती हैं। मार्गशीर्ष मास में भगवान केशव जी को स्मरण करते हुए 'उत्पन्ना एकादशी'

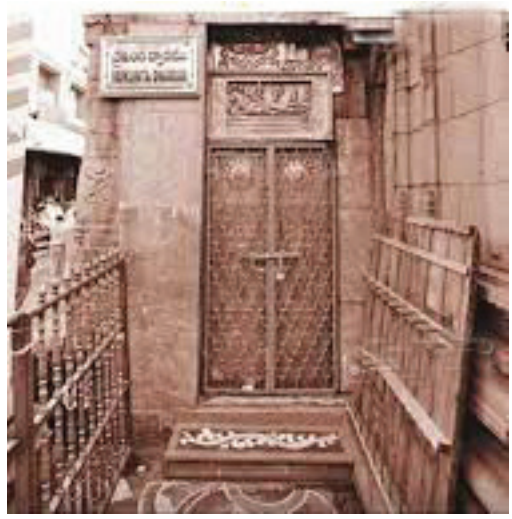

और ''वैकुंठ एकादशी' मनाई जाती हैं जिसको 'मोक्षदा एकादशी' भी कहते हैं। वैसे ही पौष मास में भगवान विष्णु जी को याद करते हुए 'सफल एकादशी' और 'पौष पुत्रदा एकादशी' मनाई जाती हैं।

कुछ प्रांतों में इसे 'वैकुंठ एकादशी' के नाम से भी मानते हैं। माघ मास में भगवान माधव जी को समर्पित करते हुए 'तिला एकादशी' और 'जया एकादशी' मनाते हैं। वैसे ही फाल्गुन मास में भगवान गोविंद जी का स्मरण करते हुए 'विजय एकादशी' और 'आमलकी एकादशी' मानते हैं।

इस प्रकार एक साल में 12 महीनों में दो-दो बार एकादशी व्रत मना कर भगवान विष्णु के स्मरण करते हुए उनके भजन कीर्तन में अपना दिन बिताते रहते हैं। इनके साथ-साथ तीन सालों में एक बार अधिक मास के नाम से एक महीना अधिक आता है जिसमें पुरुषोत्तम भगवान जी के नाम के 'पद्मिनी विशुद्ध एकादशी' और 'परम शुद्ध एकादशी' के नाम से मनाते हैं।

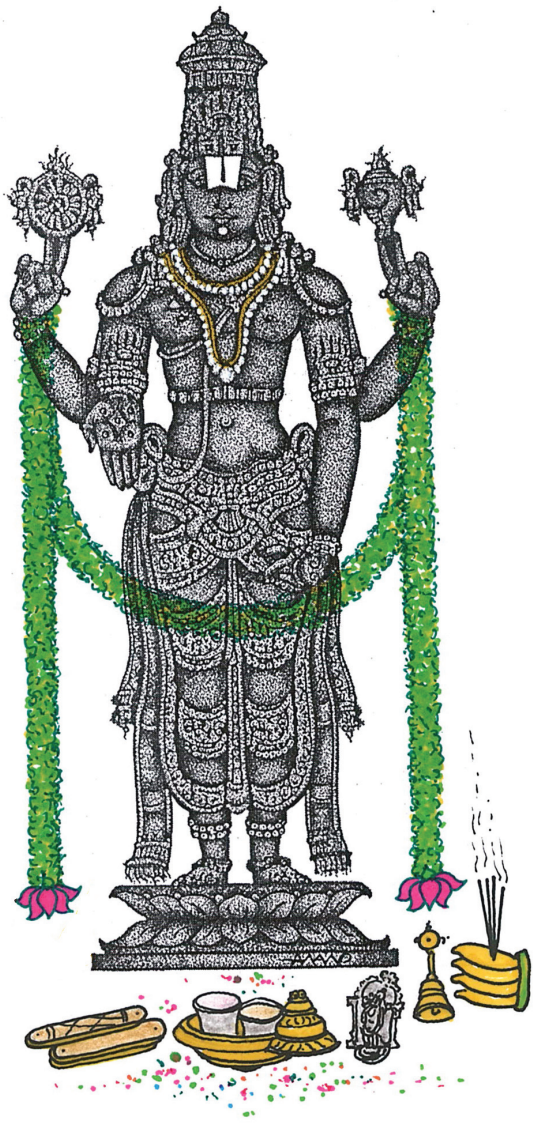

इन 24 एकादशियों में वैकुंठ एकादशी विशेष महत्व रखती है। वैकुंठ एकादशी की गणना सूर्य की गति के अनुसार होती है। जब सूर्य धनु राशि में प्रवेश करते हैं उस समय जो पहली एकादशी आती है उसे वैकुंठ एकादशी कहते हैं। कहा जाता है कि इस दिन को श्रीवैकुंठ के सभी द्वार खुले रहते हैं और इस दिन पर जिस किसी की मृत्यु हो जाती है वे सीधे श्रीवैकुंठ में पहुँच जाते हैं। इसीलिए इसको मोक्षदा एकादशी भी कहते हैं। माना जाता है कि इस दिन पर तीन करोड़ देवी देवताएँ श्री महाविष्णु की सेवा करने के लिए श्रीवैकुंठ पहुँचते हैं। इसके लिए इसे 3 करोड़ या मुक्कोटि एकादशी भी कहते हैं। इस दिन पर सभी वैष्णव मंदिरों में 'उत्तर द्वार' में भगवान के दर्शन के लिए विशेष आयोजन किये जाते हैं क्योंकि उत्तर द्वार मोक्ष का द्वार माना जाता है और उस द्वार में गरुड़ वाहन पर श्री महाविष्णु का दर्शन करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है। इसी विश्वास के साथ करोड़ों भक्त श्री महाविष्णु के दर्शन के लिए लालायित होते हैं। श्रीरंगम, तिरुमल, भद्राचलम आदि महान पुण्यक्षेत्रों में वैकुंठ एकादशी की शोभा देखते ही बनती है। करोड़ों की संख्या में भक्तगण ब्राम्ही मुहूर्त से ही उत्तर द्वार में भगवान के दर्शन के लिए खड़े होते हैं। महाविष्णु से संबंधित पुण्य क्षेत्रों में मनाए जाने वाले सबसे बड़े त्योहारों में श्रीवैकुंठ एकादशी एक है।

वैकुंठ एकादशी का उत्सव सिर्फ एक दिन का उत्सव नहीं है। वैकुंठ एकादशी के पहले 10 दिन 'पगल पत्तु' के नाम से और बाद के 10 दिन 'रापत्तू' के नाम से पूरे 20 दिन तक मनाए जाते हैं। इस समय द्रविड़ प्रबंध का पारायण, श्री वैकुंठ गद्य का पाठन, यज्ञ, प्रवचन एवं भाषण आदि की व्यवस्था की जाती है। प्रभुजी को प्राकार उत्सव, ऊंजलसेवा आदि मनाए जाते हैं। खासकर श्रीरंगम और तिरुमल क्षेत्र में इन उत्सवों का वैभव वर्णन से अतीत हैं। बड़े पैमाने पर भक्तगण इन क्षेत्रों में पहुँचते हैं।

वैकुंठ एकादशी के महत्व के बारे में बताते समय श्रीमद्भागवत महापुराण में, विष्णु पुराण और अन्य पुराणों में पाए जाने वाली एक दिव्य कथा हमें अवश्य याद आएगी। सूर्यवंश का एक महान राजा था अंबरीश। वे एकादशी उपवास रखते थे तो एक बार दुर्वासा महर्षि उनके यहाँ आए। वह दिन द्वादशी का पुण्य दिन था। जितना महत्व एकादशी के दिन पर उपवास रखने को है उतना ही महत्व द्वादशी के पारण को भी हैं यानी द्वादशी तिथि के समाप्त होने के पहले ही कुछ न कुछ खाना चाहिए। ऐसे समय पर दुर्वासा महर्षि ने कहा कि वह

अपने शिष्यों के साथ नदी में स्नान करने के लिए जाकर वापस आएंगे तो अंबरीश जी उनकी प्रतीक्षा करते हुए बैठे थे। दूसरी ओर द्वादश की तिथि समाप्त होने जा रही थी, लेकिन दुर्वासा महर्षि वापस नहीं आए। घर आए मेहमान को न खिलाकर स्वयं खाना गलत मानी जाती हैं और वैसे ही द्वादशी के समाप्त होने के पहले ही कुछ न खाए तो एकादशी व्रत तोड़ने का पाप भी मिलेगा।

ऐसे धर्म संकट में पड़े हुए अंबरीश जी ने थोड़ा-सा तुलसी जल पी लिया ताकि वे एकादशी व्रत की समाप्ति कर सके और वैसे ही अतिथि को न खिलाकर कुछ न खाने का दोष भी उनको नहीं लगेगा। ऐसा सोचकर अंबरीश जी दुर्वासा महर्षि के लिए इंतजार कर रहे थे। जब दुर्वासा महर्षि वापस आए तो उनको यह बात मालूम हुई कि उनके आने के पहले ही अंबरीश जी ने पानी पी लिया। इस बात से वे क्रोधित हुए और अपनी जटाओं में से एक जटा खींचकर नीचे मारा तो उसमें से एक भयानक राक्षस निकला। वह राक्षस अंबरीश को खाने उसकी तरफ आने लगा। तब महान भक्त अंबरीश ने भगवान विष्णु से प्रार्थना करके उनके सुदर्शन चक्र को उस राक्षस पर छोड़ दिया।

सुदर्शन चक्र ने राक्षस को मारा और फिर वही न रुक कर दुर्वासा महर्षि की तरफ भी आने लगा। उससे बचने के लिए दुर्वासा महर्षि ने सभी लोगों की परिक्रमा की। लेकिन ब्रह्म, शिव, इंद्र जैसे महान देवताओं ने यह कहकर हाथ उठा लिया कि वे भगवान विष्णु के आयुध से दुर्वासा महर्षि को नहीं बचा सकते तो अंत में दुर्वासा महर्षि ने भगवान विष्णु की ही शरण ली। तब भगवान विष्णु ने कहा कि वह भी सुदर्शन चक्र को रोकने में असमर्थ है क्योंकि उनसे अधिक महत्व उनके भक्तों में होती है और उन्होंने सलाह दी कि वह स्वयं अंबरीश की शरण ले। तब जाकर दुर्वासा महर्षि ने अंबरीश की शरण मांगी और चक्रायुध से बच पाए। यह अंबरीश उपाख्यान वैकुंठ एकादशी के पावन दिन पर विशेष रूप से श्रवण किया जाता है। इस प्रकार विष्णु भक्तों को यह आश्वासन मिलता है कि भगवान विष्णु की शरण में आनेवालों को किसी प्रकार का भय नहीं रहता, कोई भी शत्रु उन्हें किसी भी प्रकार की हानि नहीं पहुँचा सकता और अंत में उन्हें मोक्ष की प्राप्ति होती है।

तिरुमल महापुण्य क्षेत्र में वैकुंठ एकादशी की शोभा का वर्णन करना किसी के बस की बात नहीं होती। पूरे 10 दिनों तक चलने वाले इस उत्सव में भाग लेने के लिए देश के कोने-कोने से विष्णु भक्त यहाँ पहुँचते हैं। द्रविड़ प्रबंध के पाठन से तिरुमल के पहाड़ गूँज उठते हैं। उस श्रीवैष्णव गोष्ठी का दर्शन करने के लिए ही बहुत सारे श्रद्धालु यहाँ आते रहते हैं। श्री वेंकटेश्वर प्रभुजी के आनंदनिलय मंदिर को देश-विदेश से लाये गए तरह-तरह के रंग-बिरंगे फूलों से सजाया जाता है। भगवान वेंकटेश्वर जी ऊंजलसेवा में भक्तों पर अपनी कृपा दृष्टि फैलाते बैठे रहते हैं।

खासकर वैकुंठ एकादशी के पर्वदिन पर श्री वेंकटेश्वर स्वामी के उत्तर द्वार दर्शन के लिए लाखों की संख्या में भक्तगण यहाँ पहुँचते हैं। आजकल भक्तों की सुविधा को दृष्टि में रखकर आगम पंडितों की सलाह पर यह उत्तर द्वार दर्शन 10 दिन के लिए आयोजित किया जा रहा है जिससे अधिक से अधिक भक्त लाभ उठा सके। इस प्रकार श्रीवैकुंठ एकादशी भक्तगणों के लिए एक विशेष व्रत एवं पर्वदिन के रूप में भगवान की कृपा पाने का आसान मार्ग बना हुआ है।

(गतांक से)

तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर

(तिरुपति बालाजी)

हिन्दी अनुवाद - प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव
प्रो.गोपाल शर्मा

प्रथम आल्वारों का एक अनुशीलन

प्रथम आल्वार चतुष्टय तृतीय (तीसरी) शताब्दी में रहते थे। उनके वर्णनों से यहा पता चलता है कि उस समय पवित्र वेंगडम् घने जंगल का प्रांत था। उस पर बाँस की झाडियाँ अधिक थीं। पवित्र सरिताओं और निर्झरों से भरा जंगली प्रांत था। उन वनों में शेर, बाघ, याली या शरभ, विषैले सर्प, भालू आदि वन्य पशु बडी संख्या में रहते थे। वन्य जाति के 'कुरवा' लोग वहाँ के निवासी थे। तपस्वी यहाँ तपोनिष्ठा में मग्न हो रहते थे। श्री वेंकटेश्वर की पूजा और आराधना में लीन हो देवता समूह वहाँ रहता था। भक्त और ज्ञानी प्रतिदिन फूलों, दीपों, मशालों और यहाँ तक पानी को भी लेकर भगवान के पास पूजा के लिए पहुँचते थे। द्वादशी के दिन पर तो भक्तिन महिलाएँ फूल मालाओं को समर्पित कर भगवान की आराधना करती थीं। श्रवणा नक्षत्र (भगवान के आविर्भाव का नक्षत्र था, जन्म नक्षत्र) पर तथा अन्य विशेष पर्व दिनों पर विशिष्ट विधि से पूजाएँ संपन्न की जाती थीं। 'कुरवा' जाति के लोग मस्त हाथियों को दूर भगाने के लिए झंझाओं से फेंक गये मूल्यवान पत्थरों की वर्षा कर, उनको भगाते रहते थे।

[पाशुरों द्वारा प्राप्त इन तथ्यों के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि वेंगडम् पहाड घने जंगलों का पहाड है। उस पर अनेक वन्य मृग रहते थे। चारों दिशाओं से भक्त हर दिन पूजा सामग्री पहाड पर ले जाते थे। लेकिन पहाड पर 'कुरवा' जाति के लोगों के अलावा कोई और निवास नहीं करते थे (पोयगै आल्वार का पाशुरम सं.37)। भगवान वेंकटेश्वर की पूजा व्यवस्थित रूप से नहीं चल रही थी। भक्त जन अपनी ओर से पूजा करते थे। हर एक की अपनी पद्धति होती थी। द्वादशी की पूजाएँ अवश्य अलग ढंग से मनायी जाती थीं (पोयगै आल्वार, पाशुरम सं.82)। पूजारियों और वेद पंडितों की देखने के बिना पूजाएँ संपन्न होती थीं। बहुत समय बाद ही वैखानस आचार्य मंदिर के साथ जुडे हैं। पूजा व्यवस्था उनकी देख-रेख में सुदृढ़ बनी। वेंकटाचल माहात्म्य के अनुसार रंगदास के साथ वैखानस आचार्य मंदिर में गये थे। उससे पहले तो भगवान एक वृक्ष के नीचे थे। श्रीदेवी उनके साथ थी। लेकिन मंदिर नहीं था। (वराह पुराण, भाग II, अ. 9, श्लो. 22-24)।

आल्वार का श्रवणा नक्षत्र के दिनों का उल्लेख भी यही स्पष्ट करता है कि उन दिनों आज की तरह नित्य पूजा

विधान नहीं था। 'सामवाय रानी के द्वारा चाँदी की मूर्ति प्रदान करने के बाद ही उत्सव व्यवस्था चली - सन् 614 से]।

प्रथम आल्वार श्री वेंकटेश्वर को श्रीराम, श्रीकृष्ण, श्रीनृसिंह, श्रीवामन - त्रिविक्रम और श्रीमन्नारायण के साथ जोडते हैं और उन्हें वैकुण्ठवासी ही बताते हैं। पद पद में वे सुरों और देवताओं से वंदित रहते हैं। क्षीराब्धिशयनी हो आराम करते हैं। प्रलय से ग्रस्त होने पर वे क्षीराब्धि में वास करते हैं। वे श्री वेंकटेश्वर को कांचीपुरी, घटिकाचलम् (शोलिंगर), कुंभकोणम्, श्रीरंगम्, तिरुक्कोत्तियूर, तिरुक्कोवलूर और तिरुनीरमल के देवों के साथ भी जोडते हैं। वे कहते हैं कि तिरुवेंगडम् में भगवान खडी मुद्रा में रहते हैं; कांची के विन्नगर में बैठी मुद्रा में रहते हैं; कांची के वेंका में शयनित मुद्रा में रहते हैं और तिरुक्कोवलूर में लंबे डग भरनेवाली मुद्रा में रहते हैं। सब आल्वार विष्णु के भक्त है और सब ने श्री वेंकटेश्वर को (वेंगदत्तन को) विष्णुमूर्ति ही माना है। मंदिरों में मिलनेवाली विग्रह-मूर्तियों को विभिन्न रूपों में विलसित मूर्तियाँ ही मानी हैं। 108 वैष्णव मूर्तियों में उनको माना है (108 वैष्णव क्षेत्र हैं)। पोयगै आल्वार और पेयाल्वार तो वेंकटेश्वर के साथ शिव और विष्णु के संकेतों को स्वीकार करते हुए उन्हें हर-हरि रूपा भी मानते हैं। इसी भावना को आगे तिरुमंगैयाल्वार ने भी स्वीकार किया है।

इन आरंभिक आल्वारों ने श्री वेंकटेश्वर को देवाधिदेव कहा है। उन्हें तुलसीमालाधारी, वनमालाधारी और नीलघन देहधारी कहा है। सभी देवताओं (वानोर, विन्नोर, विन्नवर, देवता, सुर, दिव्य देहधारी) से परिवेष्ठित और आराधित देव कहा है। उन्हें कमल नयन और पदकमल युक्त माना है। इतना ही नहीं, भगवान आल्वारों के हृदय में वास करनेवाले भी हैं। उनके मनों और उनकी चेतनाओं में बसे हैं। उन्हें वे कुमारन् (युवा) मानते हैं। कहते हैं कि वे इलन - कुमारन्, इलनकुमार - कोमन (युवकों के देव) हैं।

पेयाल्वार के पाशुरम 45 में ही श्री वराह स्वामी का उल्लेख है। तिरुमलै शब्द वेंगडम् का पर्यायवाची शब्द ही है (पाशुरम 75)। पाशुरम 40 में भगवान को 'उत्तमन' (सर्वश्रेष्ठ) कहा गया है। 'उत्तमन' माने पुरुषोत्तम है।

रानी सामवाय से संबन्धित अभिलेखों में चाहे विष्णु के हाथों में रहनेवाले शंख और चक्र का उल्लेख न हो फिर भी तीनों आल्वारों ने भगवान को विष्णु माना है। इतना ही नहीं श्रीकृष्ण, श्रीराम और नृसिंह भी कहा है। एक मात्र पेयाल्वार ने भगवान के एक हाथ में चक्र के स्थान पर शिव की परशु होने का उल्लेख किया है (पाशुरम - 63)।

आल्वारों ने अनेक पाशुरों में वेंगडम् को विभिन्न अवतारों में भगवान का आवास माना है। पोयगै आल्वार ने इसे पापियों के समस्त पापों का नाशक भी कहा है और वानोर (आत्माओं) का उद्धारक भी (पाशुरम 76)। भक्तों में बिना भेदभाव दर्शाये स्वर्ग प्रदान करनेवाला पवित्र पहाड भी माना है।

तिरुमलिशैयाल्वार तो 'नान्मुगन - तिरुवंदादि' के पाशुरम 42 में कहते हैं कि पाप हरना वेंगडम् की प्रकृति ही है और भक्तों को श्रद्धा के साथ उसके सामने प्रणमित होना है। पाशुरम 44 में वे युवा लोगों को प्रोत्साहित करते हुए कहते हैं कि उनको पर्वत पर जाकर भगवान की आराधना करनी है। पाशुरम 45 में वे स्पष्ट प्रबोधित करते हैं कि वेंगडम् देवताओं और मानवों के लिए अतुलनीय कोष है। भूलोक की संपत्तियों और सुखों के पीछे पडने के बदले वेंगडम् पहुँचकर भगवान की आराधना करना बेहतर सिद्ध होगा। पाशुरम 46 और 48 इसी भावना को और पुष्ट करते हैं और स्पष्ट करते हैं कि भगवान का चक्र दानवों (असुर, राक्षस, दुष्टात्मा) का संहारक और वानवर (देवता) तथा भक्तों का रक्षक है। सभी के पापों का हारक भी है।

नम्मालवार

कहा जाता है कि नम्मालवार का जन्म ताम्रपर्णी नदी के किनारे पर स्थित तिरुकुरुकूर में हुआ है। द्वादश आल्वारों में ये महत्वपूर्ण, पांडित्यपूर्ण और प्रज्ञावान माने जाते हैं। आपने चार प्रकार की रचनाएँ की हैं - ऋग्वेद की व्याख्यावत समझा जानेवाले ''तिरुविरुत्तम'' जिसमें 100 पाशुरम हैं, यजुर्वेद से संबन्धित ''तिरुवासिरियम्'' के सिर्फ 7 पाशुरम, अथर्ववेदीय सार से युक्त ''पेरिय - तिरुवन्दादि'' के 87

पाशुरम और सामवेद के प्रभाव से युक्त ''तिरुवायमोळि'' के 1102 पाशुरम हैं। इनमें से 35 पाशुरम भगवान श्री वेंकटेश्वर पर हैं।

सुदूर दक्षिण में रहते हुए ये वेंगडम् की पूरी पहचान नहीं रखते थे किन्तु उन्होंने वेंगडम् पर और उसके महत्व पर चाक्षुस ज्ञान से अधिक श्रुत ज्ञान प्राप्त किया है। भगवान की पवित्रता, महत्ता और विशिष्टता का ज्ञान प्राप्त कर ही बहुत कुछ लिखा है। (डॉ.यस.के.अय्यंगार, हिस्टरी ऑफ तिरुपति, खण्ड I, पृ.140)।

तीसरे तिरुवायमोळि के तीसरे दशक के 10 पाशुरों में नम्माल्वार तिरुवेंगडत्तान (तिरुमल के श्री वेंकटेश्वर) की महत्ता गाते हैं। भगवान के पदकमलों में नतमस्तक होकर आराधना करने के लिए भक्तों को प्रोत्साहित और प्रबोधित करते हैं। वे घोषित करते हैं कि तिरुवेंगडम् ही ऐसी महान शक्ति से संपन्न है। वह भक्तों को मुक्ति प्रदान कर सकता है। अपने पाशुरम 8 में वेंकटेश्वर को त्रिविक्रम कहते हैं। पाशुरम 8 और 9 में श्रीकृष्ण के रूप में भी वर्णित करते हैं। वे साथ-साथ कहते हैं कि ये भगवान उम्र के साथ भक्तों को सतानेवाली पीडाओं, व्यथाओं, रोगों आदि से रक्षा प्रदान करते हैं। उनके पाद पद्मों पर झुकनेवालों को मुक्ति प्रदान करते हैं। उनको मानवीय धरातल से उन्नत दैवी धरातल पर ले जाते हैं। पाशुरम 10 में वे समझाते हैं कि भक्त होकर जन वेंकटाचल जायें और वेंकटेश्वर की आराधना करें। भक्त अपने बुढापे तक इंतजार न करें। युवावस्था से ही भगवान की पूजा, अर्चना आदि से जुडे। वृद्धावस्था के आक्रमण से शरीर जर्जरित होता है। वेंगडम् जाना कठिन भी होगा। पाशुरम 11 में वे कहते हैं कि इन 10 पाशुरों का गायन भक्तों को सुखी और आनन्द देता है।

10 पाशुरों की एक और इकाई में, छटवें इकाई में, (तिरुवायमोळि में) वे भगवान वेंकटेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वे उन्हें तिरुवेंगडम् पहुँचकर उनके सामने प्रणमित होने का रास्ता बतायें। इसमें आल्वार भगवान को श्रीवैकुण्ठवासी कहते हैं। प्रलय के समय में विश्व के रक्षक मानते हैं। सुरों (देवताओं) के रक्षक और असुरों (दुष्ट राक्षस) के संहारक कहते हैं। नीलघन श्याम और सारंगपाणी कहते हैं। उनका अधर बिम्ब फ़ल समान लाल है, उन्हें श्रीलक्ष्मी पति और गरुडध्वज भी बताते हैं।

भगवान को अपने मस्तिष्क में हमेशा स्थिर रहनेवाले भव्य स्वरूपा कहते हैं। पाशुरम 5 में श्री वेंकटेश्वर को श्रीराम मानते हुए उन्हें सात साल वृक्षों को गिरानेवाला कहते हैं। श्रीकृष्ण कहते हुए यमलार्जुन रक्षक कहते हैं (पेड के रूप शापवश यमल और अर्जुन पाये थे)। पाशुरम 6 में वे भगवान को वामन कहते हैं। 5 एवं 6 पाशुरों में कहते हैं कि देवता समूह अनवरत उनकी आराधना में वेंकटाचल पर मग्न रहते हैं। पाशुरम 7 में आल्वार भगवान को अमृतमय बताते हुए कहते हैं कि उनके चरणकमलों के दर्शन के बिना वे रह नहीं पा रहे हैं। क्षण मात्र के लिए भी वे भगवान के चरणों से दूर होना नहीं चाहते हैं।

क्रमशः

संक्रांति

- डॉ.एस.हरि

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहाँ कि संस्कृति और अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि पर निर्भर है। अनादिकाल से यहाँ कृषि की महत्ता बनी हुई है, क्योंकि यहाँ के लोगों के जीवन का मूलाधार कृषी ही है। अतः खेती और फसलों का भारत में विशेष महत्व रहा है। यह भारतीय समाज और संस्कृति का अभिन्न अंग है और कई त्यौहारों का आधार भी फसलें ही हैं।

ऋतु चक्र के अनुसार यहाँ फसल चक्र भी जुड़ा हुआ है। इसी के चलते भारतीय समाज में कई त्यौहार फसल चक्र और ऋतु परिवर्तन से जुड़े हुए हैं। ''मकर संक्रांति'' भी एक ऐसा ही त्यौहार है, जो फसल की कटाई और अच्छी फसल के उत्पादन की खुशी में मनाया जाता है। इसलिए इस त्यौहार को फसलों व पशुओं का त्यौहार भी कहा जाता है। पूरे भारत में यह त्यौहार अलग-अलग नामों व परंपराओं के साथ मनाया जाता है। जैसे उत्तर भारत में संक्रांति, दक्षिण भारत में पोंगल, पश्चिम में उत्तरायण, महाराष्ट्र में तिलगुल नाम से मनाया जाता है। इस प्रकार यह त्यौहार भारत में अनेकता में एकता और भिन्नता में अभिन्नता का प्रतीक है, जो कृषि परंपराओं को एक साथ जोड़ते हुए पूरे भारत में अखंडता को बल देता है ताकि किसान इस देश के अन्नदाता हैं, उनके योगदान से देश की समृद्धि और विकास संभव है।

संक्रांति का महत्व :

संक्रांति का पर्व भारतीय किसानों के जीवन में अत्यधिक महत्व रखता है जो हर वर्ष 14 जनवरी को मनाया जाता है। क्यों कि इस दिन सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता है। इसीलिए इसे 'मकर संक्रांति' के नाम से भी जाना जाता है। इस दिन से ऋतु परिवर्तन होता है और दिन बड़े होने लगते हैं। धार्मिक दृष्टि से, यह दिन सूर्य देव की उपासना और पुण्य प्राप्ति का दिन माना जाता है। इसके अलावा, यह त्यौहार भारतीय

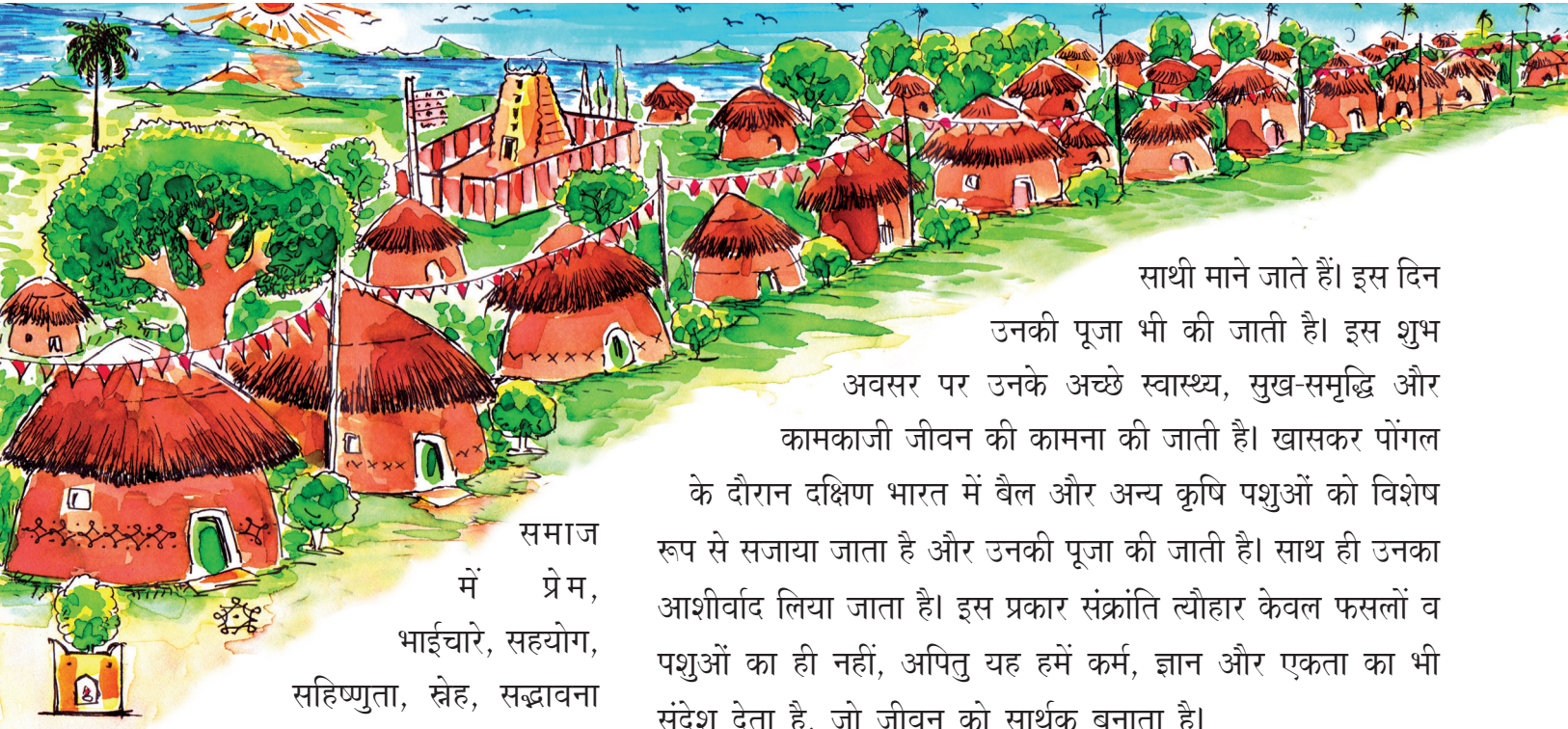

समाज में प्रेम, भाईचारे, सहयोग, सहिष्णुता, स्नेह, सद्भावना जैसी भावनाओं को प्रोत्साहित करता है, ताकि पूरे भारत के लोग एकजुट हो सकें। इस मौसम में फसलों की कटाई होती है और किसानों को अपनी मेहनत का फल प्राप्त होता है। इस खुशी में किसान लोग तिल-गुड़ के साथ एक-दूसरे को मिठाइयाँ बाँटते हैं और अपने आपसी रिश्तों को मजबूत करते हैं। इस शुभ अवसर पर वे अपनी फसलों के कुछ हिस्से को गरीबों में बाँटते हैं, दान-दक्षिणा करते हैं और सभी को खुश करने की कोशिश करते हैं। वास्तव में, यह एक सौभाग्य का दिन माना जाता है।

संक्रांति का पर्व न केवल सूर्य की उपासना और फसलों की कटाई, सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व ही नहीं, बल्कि पशुओं का भी विशेष महत्व दर्शाता है। भारतीय किसान अपने कृषि कार्यों में गाय, बैल, ऊँट, घोडा, बकरी जैसे पशुओं का सहारा लेते हैं और फसल उगाने में वे उनके साथी माने जाते हैं। इस दिन उनकी पूजा भी की जाती है। इस शुभ अवसर पर उनके अच्छे स्वास्थ्य, सुख-समृद्धि और कामकाजी जीवन की कामना की जाती है। खासकर पोंगल के दौरान दक्षिण भारत में बैल और अन्य कृषि पशुओं को विशेष रूप से सजाया जाता है और उनकी पूजा की जाती है। साथ ही उनका आशीर्वाद लिया जाता है। इस प्रकार संक्रांति त्यौहार केवल फसलों व पशुओं का ही नहीं, अपितु यह हमें कर्म, ज्ञान और एकता का भी संदेश देता है, जो जीवन को सार्थक बनाता है।

संक्रांति त्यौहार की विशेषताएँ :

संक्रांति त्यौहार भारत में बड़ी श्रद्धा, निष्ठा और धूम-धाम से मनाया जाता है। खासकर यह त्यौहार भारत के ग्रामीण या देहाती क्षेत्रों में विशेष महत्व रखता है। इसे मनाने में किसान लोग गौरव का अनुभव करते हैं, जो प्रकृति के प्रति उनकी आराधना को व्यक्त करता है। यह त्यौहार अलग-अलग राज्यों में विभिन्न तरीकों से मनाया जाता है। जैसे दक्षिण भारत में पोंगल, पंजाब में लोहडी, उत्तर भारत में

संक्रांति। यह विभिन्न सांस्कृतिक विविधताओं को एक जुट करता है, जो भारत की भावात्मक एकता को सुदृढ़ बनाता है।

संक्रांति त्यौहार सामूहिक रूप से मनाया जाता है, जिसमें लोग एक-दूसरे से मिलकर मेल-मिलाप करते हैं, गले मिलते हैं, मिठाइयाँ बांटते हैं, पतंग-बाजी उड़ाते हैं और सामूहिक रूप से खेलते हैं। बैलों से संबंधित खेल भी आयोजित किये जाते हैं। खेलों में जीतने वालों को पुरस्कार भी दिए जाते हैं, उनका सम्मान किया जाता है और सभी मिलकर एक सामूहिक रूप देने में सहायक होते हैं। यह त्यौहार परस्पर सहयोग, सद्भावना, प्रेम और एकता का प्रतीक है।

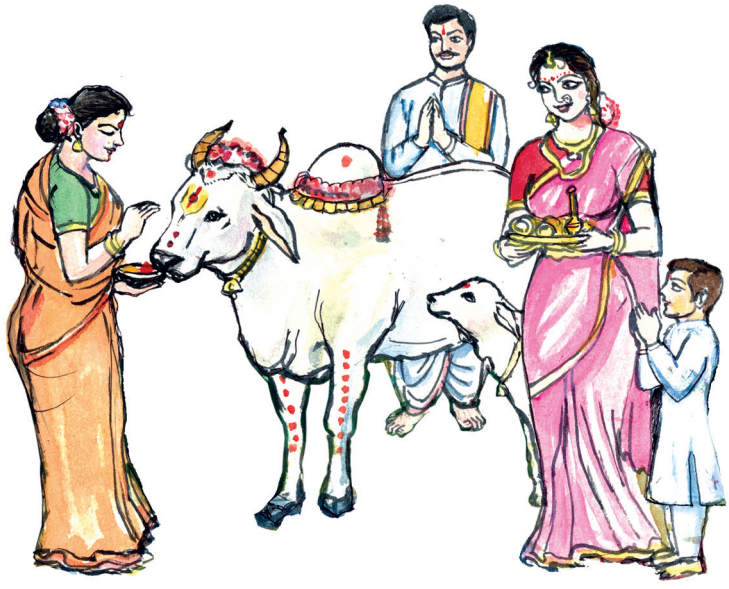

संक्रांति केवल एक त्यौहार ही नहीं, बल्कि यह मानवता, प्रकृति, कर्म और परस्पर सहयोग के प्रति हमारी आस्था को संबल प्रदान करता है। यह प्रेम, सहयोग, स्नेह और सद्भावना का संदेश देते हुए भारतीय सांस्कृतिक एकता को सुदृढ़ बनाता है। इस प्रकार संक्रांति किसानों की सांस्कृतिक विरासत और धार्मिक परंपराओं की अमूल्य धरोहर है। अतः यह हमारे कृषि प्रधान संस्कृति की सबसे बड़ी उपलब्धि है।

श्री वेंकटाचल की महिमा

(हिंदी गद्यानुवाद)

चतुर्थ आश्वास

तेलुगु मूल
मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा

हिंदी अनुवाद
आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी

वेंकटाचल (कलियुग) :

1. माधव का वृत्तांत :

''सुनो! श्रीकालहस्ति में पुरंदर सोमयाजी का पुत्र माधव नामक एक युवक रहा करता था। अपने कर्म के अनुसार एक दिन अपनी पत्नी चंद्र रेखा को दिन में रति करने के लिए बुलाने से वह भयभीत होकर 'बडे लोग घर में रहते दिन में यह किस रीति में होगा।' कहते बहु विध बता कर उस के वश में नहीं आयी। माधव इस का सहन नहीं करके पुनः प्रार्थना करने पर पति की आज्ञा से बढ कर कोई धर्म नहीं है, जानते हुए भी पति की ओर दया से देखकर चंद्ररेखा ने इस रूप में कहा। ''देवतार्चन अग्निहोत्रादि, सत्क्रियाओं का आचरण करने के समय में रति क्रीडा करना उचित नहीं है।'' कहते अनेक प्रकार से कहने पर भी, अनसुना करके पति उस पर अत्याचार करने के लिए तैयार हो गया। तब सति ने पति से ''आप तुलसी-पुष्पादि संग्रहण हेतु नदी के तट पर वन में रहो, मैं वहाँ जल लेने के बहाने कलश लेकर आऊंगी। वहाँ पर आप के संकल्प की पूर्ति होगी।'' कहते अपनी सम्मति दी है। तब पति माधव सुवर्णमुखी नदी के तट पर रहनेवाले वन पहुँच गया। उस के पहले ही वहाँ पर पहुँच कर स्वर्ण भूषण श्वेतांबर अलंकृत होकर, एक पैर मोड कर, पैर के अंगूठे को जमीन पर गाड कर, फिर उठाते, घुटनों पर चुबुक को रखकर, दीर्घ नील कुंतल के चमकते, वहाँ बैठी पद्मिनी जाति की चंडाल स्त्री को देखकर उस पर वह विप्र मोहित हो गया। उस समय अपनी पत्नी के वहाँ पर आने से 'तुम्हारे गुण की परीक्षा के लिए ही दिन में रति क्रीडा करने तुझे यहाँ बुलाया है। दिवाक्रीडा मुझे भी पसंद नहीं है, कहते पत्नी को वापस भेज दिया। पत्नी के जाने के बाद वह अपने पास आते देखकर चंडाल स्त्री उसे नमस्कार करते उससे दूर दूर जाती रही। किंतु विप्र उस का पीछा करता रहा। आखिर विप्र को देखकर भय से उस स्त्री ने कहा।' ''हे धरणी सुरेंद्र! मेरे पास इस रूप में आना नीतियुक्त नहीं है। कौन समझकर मेरे पास आ रहे हो? मैं चंडालिन हूँ।'' कहने पर दया से उस विप्र ने इस रूप में कहा। ''तुम्हारा नाम क्या है? बताओ री।'' सुन

कर उस स्त्री ने उसे देखकर ''मुझे कुंतल नाम से पुकारते हैं। इस रूप में पूछते मेरे पास पहुँचना ठीक नहीं है। दूर चले जाओ। तुम मेरे पास मत आओ। मैं नीच जाति की हूँ।'' कहते जानेवाली उसे छोड कर जाने में असमर्थ माधव बार-बार उस का पीछा करता रहा। फिर भ्रांति में उस विप्र ने इस रूप में कहा। ''हे भामा! तुझ जैसी कन्या को ब्रह्म देव ने नीच जाति में पैदा करके जंगल में खिली चांदनी की तरह गलत किया है। री मैं ब्रह्म की क्या निंदा करुँ। सागर में उपलब्ध रत्नों को सिर पर पहननेवाले राजाओं की तरह तुझे मैं वरण करूँगा।'' ''कहते भय छोड कर विप्र ने विवरण दिया।''

2. कुंतला का माधव से वाद करना :

विप्र की बातें सुन कर कुंतला ने भीति से, विवेक से विप्र की ओर देखकर इस रूप में कहा। ''जार कांता से और महाविष सर्प से कोई बचा है क्या? तुम पर विश्वास करनेवाली पत्नी को छोड कर मुझे पाने से तुम्हारे इह और पर लोक बिगड जायेंगे। हे ब्राहणोत्तम! धीरज से काम लो। हे महात्मा! स्त्री पुरुष जाति द्वय को पैदा करके, उन की चार जातियों का निश्चय करके, पुरुष अपनी जाति की स्त्री से पाणीग्रहण करके, अपनी पत्नी से संतान को प्राप्त करके, पर स्त्री के साथ संबंध की अपेक्षा नहीं करते हुए आचरण करना चाहिए, ऐसा धर्म शास्त्र कह रहा है। तुम ऐसे धर्म के बारे में जानते हुए भी चंडाल स्त्री के संभोग को चाहना क्या ठीक है? ब्राह्मण होते जन्म से गर्भदान तक के सोलह कर्मों का आचरण करने की योग्यता रखते हुए, मुझ जैसे चंडाल का स्पर्श करना उचित नहीं है। क्यों कि तुम्हारा देह वेदात्मक है। तुम्हारे श्रोत्रा, नेत्र, नासपुट, जिह्वा, पाणी, पाद पुण्य कथा श्रवण, भगवद्दर्शन, हरिपादर्पित तुलसी पुष्प घ्राण, वेदाध्ययन, दान, तीर्थ यात्रादि सत्क्रियाओं से पवित्र बने हैं। आप के श्रोत्र प्रमुखेंद्रीय दुष्कथा श्रवणादि दुष्क्रियाओं से अपवित्र हो जायेंगे। इसलिए तुम मेरे देह के साथ समागम को मत चाहो।'' कहते कोयल की बोली में कुंतला ने धर्म-शास्त्र-विवेक प्रकार से उसे समझाया। ऐसी कुंतला को देखते हुए विह्वल होकर विप्र उसे पकडने की कोशिश करने पर वह भीति से रोने लगी। तब उसने दिग्देवताओं की ओर देखकर 'यह ब्राह्मण पाप जाति वाली मुझे पाकर कुलहीन होकर नरक में जाने के लिए उद्युक्त हो रहा है। इस में मेरा कोई दोष नहीं है। आप सब ही इस के लिए साक्षी हैं।' कहते दूर जानेवाली उस के पास जाकर विप्र ने इस रूप में कहा।

''हे भामा! बिना डर के सुनो। मेरा तप आज सफल हो गया। इसलिए तुम को मैं देख सका। इसलिए मुझे क्षमा करके मुझे काम-सुख दो।'' कहने से भीति से उसने कहा। ''अकट! हे ब्राह्मणोत्तम! काम सुख की चाहत से अनावश्यक तुम क्यों संकट में पडते हो? अपने गृह शीघ्र जाकर स्वकीय पत्नी से काम सुख को प्राप्त करो। मुझे पकडने से दोष होगा। क्यों मुझे चाहने लगे हो? तुम को अपभ्रम हो गया है। चंडाल स्त्री के साथ संभोग हे पंडित! तुम्हारे लिए कैसे उचित है? ब्राह्मण कुल को क्यों कलंकित कर रहे हो? दूर ही रहो। अहो विप्र! मुझे पकडने की कोशिश मत करो।'' कहते वह पीछे जाने लगी। यह देखकर विप्र अपने कुल को भूल कर कामांध के बढने से उस के समीप जाने लगा।

तब उस कुंतला ने उसे देखकर 'तुम्हारे जननी-जनक गुरु-देव समान हूँ। मेरे पास मत आओ।' कहने से भी उसने उसे अनसुना करके उसे पकड कर पा लिया। तब कुंतला ने उसे देखकर ''हे विप्र! तुम अब कुल भ्रष्ट हो गये हो। अब तुम यज्ञोपवीत का परित्याग करो। चंडाल बन कर मेरे साथ रहो।'' कहने पर वह इस के लिए राजी होकर उसने कृष्णा नदी के तट पर

रहते हुए द्वादशाब्धों तक कुंतला के साथ काम भोग प्राप्त किया। बाद में कुंतला का देहांत हो गया। तब माधव दुःखी होकर अकेला घूमता रहा। उस ने मन में इस रूप में सोचा।

3. माधव का पश्चाताप :

'गुरुतर ब्राह्मण कुल में जन्म लेकर काम वासना से चंडालिन के साथ रहकर मैंने घोर पाप किया। अब पतित पावन श्रीहरि ही मेरी रक्षा कर सकते हैं।' इस रूप में पश्चाताप करते समय, कुछ भक्त राजागण वेंकटाद्री की यात्रा पर जा रहे थे। उन के साथ वह भी गया। उन के भोजन करने के बाद बचा कुचा जुठन को खाकर देहाभिमान और दंभ को छोड कर कपिलतीर्थ पहुँच गया। शेषाचल से गिरनेवाले झरने को देखकर उसे नमस्कार किया। वहाँ जब राजाओं के द्वारा केश खंडन करते समय स्वयं भी केश खंडन करवा लिया। उन के द्वारा पिंड प्रदान करते समय उसने भी मिट्टी से पिंड प्रदान किया। उसके इस पिंड दान से उस के पितृ देवतागण तृप्त हुए। इसे सुन कर जनक ने शतानंद से इस रूप में कहा। ''चंडाल कन्या से रहकर कुलहीन बन कर चुप रहने की जगह इस रूप में उस के पिंड दान करने से उस के पितृ देवतागण ने कैसे पिंड दान स्वीकार किया?'' जवाब में शतानंद ने इस रूप में कहा। ''हे जनक! कपिलतीर्थ में पहले स्नान करने के पुण्य से उन्होंने पिंड दान को स्वीकार किया है।''

4. वेंकटाचल की महामहिमा :

उस का पुण्य ऐसा रहा। इससे अलग एक और महिमा के बारे में बताऊँगा। वह अगले दिन वेंकटगिरि पर्वत पर चढ गया। उस पर्वत के स्पर्श मात्र से उस ब्राह्मण के सारे पाप शिथिल होकर कांपते हुए उस के अंदर न रह पाकर उलटी हो गए। तब उस घोर अरण्य में वेंकटाद्री के प्रभाग से अग्नि बन कर जलते समय गगन दिग्भागों में लपटें और धुआँ छा गया। तब ब्रह्म, वामदेवादि ने स्वर्ग से पधार कर आश्चर्य से इसे देखा।

5. ब्रह्म के द्वारा माधव को वरदान प्रदान करना :

तब वेंकटाचल की महा महिमा से दावाग्नि पैदा होकर उसने विप्र के पापों को जला डाला। इसे माधव की महिमा समझ कर उस के शीर्ष पर फूलों की वर्षा करवायी। ब्रह्म ने धरती पर उतर कर हंसते हुए माधव को देखकर उसे आशीर्वाद दिया। तब माधव ने अपने को कृतार्थ समझकर ब्रह्म की स्तुति की। भय से मुक्त होकर हाथ जोड कर नमस्कार किया। माधव ने देवताओं से इस रूप में कहा। 'हे देव! विवेक को छोड कर उस समय मैंने पाप किए। अतिनीच बना। अब मेरी गति कैसे होगी। कृपया बताइए।' आर्ति बन कर उस के इस रूप में पूछने पर ब्रह्म ने कहा। 'हे विप्र! अब तुम्हारे सारे पाप भस्म हो गए। अब संशय मत करो। वेंकटाद्री पर अति शीघ्र जाओ। वहाँ स्वामी की पुष्करिणी में स्नान करके भूवराह स्वामी की पूजा करो। उन्हें नमस्कार करो। तब तुम इस शरीर को त्याग करो। तदूपरांत धरती पर धन्य पांडव दौहित्रवंशज सुवीर के पुत्र के रूप में पैदा हो जाओगे। तब उस सुधर्म के आत्म बंधु बन कर धरती पर नारायणपुर में रहते हुए हरि

भक्ति से निर्मल चित्त से अच्छे कार्य करते रहो। तोंड मंडल देश का धर्म मार्ग से पालन करो। तब रमेश श्री वेंकटेश्वर तुम्हारी पुत्रिका से प्रेम से विवाह करेंगे। धरती पर लक्ष्मी के अंश से एक सुंदर पुत्री तुम को होगी। प्रीति से उस पुत्रिका का विवाह श्रीहरि के साथ करो। तदूपरांत मोक्ष से वैकुंठपुरि पहुँच जाओ।' ब्रह्म ने माधव से इस रूप में कहा।

6. वेंकट नाम की परिभाषा और पुण्य फल :

माधव को ब्रह्म देव ने इस रूप में वरदान देकर उसे बिदा किया। संतोष के साथ उस पर्वत को वेंकटाचल सार्थक नाम दिया। तदूपरांत ब्रह्म, रुद्रादि देवतागण अपने निजी स्थानों पर लौट गए। कहते सुन कर जनक ने 'वेंकटाक्षरत्रय का अर्थ बताइए' शतानंद से पूछा। तब शतानंद ने इस रूप में कहा। 'सुनो। 'वे' नामक पाप के ईंधन को 'कट' युगलक्षराग्नि ने मुख्य रूप से भस्म किया। इसलिए हे अवनी नाथ! वेंकटगिरि नाम इस गिरि के लिए सार्थक हो गया। इसलिए प्रातःकाल ही उठ कर वेंकटाद्री का स्मरण करने वाले धीर को अवनि में क्रम से सौ गंगा स्नान, हजार सेतु यात्रा करने का पुण्य फल प्राप्त होगा। अवनि में उन्हें सुख-संतोष प्राप्त होंगे। इस कथा को मेरे गुरु गौतम महर्षि ने मुझे जिस रीति से बताया उसी रीति में मैंने आप को बताया। इसे सुननेवालों को शुभ प्राप्त होंगे।

जनक के द्वारा वेंकटाद्री के दर्शन करना :

'धरती पर इह और पर सुखों को चाहनेवाले अवश्य ही इस कथा को सुनना चाहिए।' शतानंद मुनि के इस रूप में कहने से जनक उस वेंकटाद्री की यात्रा करने का निर्णय करके अपने हित मंत्रीगण और शतानंद को साथ लेकर वेंकटाद्री पर आये। स्वामिपुष्करिणी में स्नान करके भू वराह स्वामी के दर्शन किए। बाद में श्रीनिवास के दर्शन किए। वहा पर दोनों देवों की सन्निधि में कुछ दिन रहे। बाद में मिथिलापुर पहुँच गए। इस प्रकार वेंकटाद्री के दर्शन करने के पुण्य फल से बाद में श्रीरामचंद्र ने शिव धनुर्भंग किया। सीता के साथ विवाह किया। साथ लक्ष्मण ने ऊर्मिला के साथ, भरत ने मांडवी के साथ, शत्रुघ्न ने श्रुतकीर्ति के साथ विवाह किया। तब वेंकटाद्री की महिमा के बारे में सुनने से ही अपनी इच्छा की पूर्ति हुई है, ऐसा जनक ने संतोष प्रकट किया। तदूपरांत शतानंद अपने तपोवन लौट गए। इस रूप में कहनेवाले सूत को देखकर शौनकादि मुनियों ने कहा।

''कमलासन ब्रह्म वेंकटाद्री पर श्रीहरि के लिए रथोत्सव किया। ऐसा आप ने बताया। तब कमलाक्ष वेंकटाद्री पर कितने समय के लिए रहे।'' मुनियों की बातें सुन कर सूत ने इस रूप में कहा। श्री वेंकटाद्री पर आद्य देव वराह स्वामी के साथ श्रीहरि नेत्र पर्व से विपुल शेषगिरि पर कलियुगांत तक रहे। **क्रमशः**

प्राचीन भारतीय संस्कृति में लोगों की जीवन पद्धति ही वैज्ञानिक जीवन पद्धति थी। वे सुबह उठने से लेकर रात सोने तक हरेक विषय में एक रीति को अपनाते थे, जिससे शारीरिक तथा मानसिक रूप से निरोगी होकर शतायुषी होते थे। आधुनिकता के नाम पर आजकल वे सब पद्धतियाँ हमसे दूर हो गई हैं। इससे बिगड़ी हुई आधुनिक जीवन शैली से लोग शारीरिक तथा मानसिक समस्याओं से जूझ रहे हैं। हमारे घरों में बड़े बुजुर्ग लोग तो अक्सर कहते थे कि 'सुबह सूर्योदय से पहले 4:00 बजे उठकर पढो, एकाग्रता बढ़ेगी; जो कुछ पढ़ोगे उसे आसानी से सीख लोगे; ध्यान और योगा करो, स्वस्थ रहोगे।' वे स्वयं सूर्योदय से पहले उठते थे और पूर्णतः स्वस्थ जीवन बिताते थे। हमारे बड़े लोग जिस समय के बारे में बताते थे, वो है 'ब्रह्म मुहूर्त'।

वेदों के अनुसार ब्रह्म मुहूर्त का महत्व

वेदों में भी ब्रह्ममुहूर्त में उठने से होनेवाले लाभों का उल्लेख किया गया है।

ऋग्वेद के अनुसार :

प्रातारत्नं प्रातरिष्वा दधाति तं चिकित्वा प्रतिगृह्यनिधत्तो।
तेन प्रजां वर्धयमान आयू रायस्पोषेण सचेत सुवीरः।।

अर्थात- सुबह सूर्योदय होने से पहले उठनेवाले व्यक्ति स्वास्थ्यवान, सुखी, सामर्थ्यवान और दीर्घायु होता है। इसीलिए बुद्धिमान लोग इस समय को व्यर्थ नहीं करते।

सामवेद के अनुसार

यद्य सूर उदितोऽनागा मित्रोऽर्यमा।
सुवाति सविता भगः।।

अर्थात- व्यक्ति को सूर्योदय से पहले शौचादि के बाद भगवान की आराधना करनी चाहिए। इस समय की शुद्ध हवा से स्वास्थ्य और संपत्ति की वृद्धि होती है।

अथर्ववेद के अनुसार

उद्यत्सूर्य इव सुप्तानां द्विषतां वर्च आददे।।

अर्थात- सूर्योदय के बाद भी जो नहीं जागते उनका तेज नष्ट हो जाता है।

लंका जैसी नगरी में भी ब्रह्मकाल में लोग उठकर अपने नित्य कर्म शुरू करते थे। वाल्मीकि रामायण सुंदरकांड के अनुसार श्री हनुमान माता सीता को रातभर ढूंढते हुए ब्रह्ममुहूर्त में अशोक वाटिका पहुँचे। वहाँ उन्होंने वेदज्ञों तथा याज्ञिक पुरुषों से मंत्र उच्चारण की आवाज सुनी।

''तथा विप्रेक्ष्यमाणस्य वन पुष्पितपादपम।

विचिन्वतश्च वैदेहीं किंचिच्छेषा निषाभवत।।

षडंगवेदविदुषां क्रतुप्रवरयाजिनाम।

सुश्रव ब्रह्मघोषांश्च स विरात्रे ब्रह्म रक्षसाम।।''

ब्रह्ममुहूर्त के विविध नाम

महर्षियों ने ब्रह्ममुहूर्त को अनेक नाम दिये हैं। जैसे - अमृतवेला, ब्रह्मवेला, देववेला, मधुमयवेला, पवित्र वेला आदि।

क्या होता है ब्रह्ममुहूर्त

'ब्रह्ममुहूर्त' शब्द में ब्रह्म का अर्थ होता है 'पवित्र' या 'सृष्टि कर्ता'; 'मुहूर्त' का अर्थ होता है 'समय'। इन दोनों शब्दों के मिलन से 'ब्रह्ममुहूर्त' बना है। अर्थात दिन का पवित्र समय। हमारे शास्त्रों के अनुसार सूर्योदय से पहले रात्रि के अंतिम प्रहर का समय ब्रह्ममुहूर्त होता है। अर्थात सूर्योदय के डेढ घंटे के पूर्व का समय। ब्रह्म काल का अर्थ सृजन की अवधि है जो सबेरे 4.24 से 5.12 तक के समय का होता है। ब्रह्ममुहूर्त का समय भी भौगोलिक स्थान तथा सूर्योदय के समय के अनुसार बदलता है। प्रकृति और ब्रह्ममुहूर्त का गहरा संबंध है। इस समय में फूल खिलते हैं; पशु-पक्षी जाग उठते हैं।

ब्रह्ममुहूर्त का काल गणना

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार 24 घंटों में अर्थात प्रातः 6 बजे से लेकर दिन-रात मिलाकर प्रातः 5 बजकर 12 मिनट तक कुल 30 मुहूर्त होते हैं। वे मुहूर्त ये हैं -

1.रुद्र, 2.आहि, 3.मित्र, 4.पितृ, 5.वसु, 6.वाराह, 7.विश्वेदेवा, 8.विधि, 9. सतमुखी, 10.पुरुहूत, 11.वाहिनी, 12.नक्तनकरा, 13.वरुण, 14.अर्यमा, 15.भग, 16.गिरीश, 17.अजपाद, 18.अहिर, 19.बुध्न्य, 20.पुष्य, 21.अश्विनी, 22.यम, 23.अग्नि, 24.विधात, 25.कण्ड, 26.अदिति जीव/अमृत, 27.विष्णु, 28.युमिगद्युति, 29.ब्रह्म और 30.समुद्रम।

एक मुहूर्त 48 मिनट के बराबर होता है। हर 48वे मिनट में मुहूर्त बदलता है। 30 मुहूर्तों में 8 प्रहर होते हैं। वे हैं दिन के चार प्रहर - पूर्वाह्न, मध्याह्न, अपराह्न और सायंकाल, रात्रि के चार प्रहर-प्रदोष, निशिथ, त्रियामा और उषा। सूर्योदय के पूर्व के चौथे प्रहर में दो मुहूर्त होते हैं- ब्रह्म और समुद्रम। उनमें से पहला मुहूर्त ही 'ब्रह्म मुहूर्त' है। अर्थात सूर्योदय से पहले लगभग डेढ़ घंटे पहले का समय है।

ब्रह्ममुहूर्त में देवता आते हैं पृथ्वी पर

विश्वास किया जाता है कि ब्रह्ममुहूर्त में देवता धरती पर विचरण करने आते हैं। इससे इस समय के वातावरण में दैवत्व छा जाता है और सकारात्मकता की ऊर्जा भरी हुई होती है।

इस समय में जागनेवाले व्यक्ति के पूरे शरीर में उस ऊर्जा का संचार होता हैं। इससे आध्यात्मिक साधना के लिए साधकों को इससे बढकर पवित्र समय और नहीं है। व्यक्ति अपने आप को भगवान से तादात्म्य होने का अनुभव करता है। माना जाता हैं कि ध्यान करते समय हम जो कुछ भी मांगते हैं वो सिद्ध हो जाते हैं। मंदिरों के द्वार भी ब्रह्म मुहूर्त में खोले जाते हैं और भगवान का अभिषेक भी इसी मुहूर्त में आरंभ होता है।

आयुर्वेद में ब्रह्ममुहूर्त का महत्व

आयुर्वेद के अनुसार स्वस्थ जीवन केलिए विभिन्न सिद्धांत हैं। उनमें से ब्रह्ममुहूर्त में जागना एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है। आयुर्वेद के अनुसार हमारा शरीर वात, पित्त और कफ से बना है। अगर वे असंतुलित होते हैं तो स्वास्थ्य बिंगड़ता है। ब्रह्ममुहूर्त में जागने पर इन तीनों का संतुलन होने से व्यक्ति स्वस्थ रहता है। इतना ही नहीं शरीर में सकारात्मक शक्ति का संचार होने से बल और बुद्धि का विकास होता है।

ब्रह्म मुहूर्त की वैज्ञानिकता

आधुनिक विज्ञान भी ब्रह्म मुहूर्त में उठने से होने वाले अच्छे परिवर्तनों का समर्थन करता है।

निद्राहीनता से मुक्ति

मस्तिष्क में पीनियल ग्रंथि द्वारा हमारे शरीर में मेलाटोनिन नामक एक अंतःस्रावी हार्मोन स्रावित होता है, जो मनोभाव(मूड) को स्थिर करता है तथा निद्रा के क्रम को संभालता है। मेलाटोनिन स्राव का स्तर रात 10:00 बजे से लेकर बढ़ते-बढ़ते मध्य रात्रि होते ही अधिकतम होता है और ब्रह्म मुहूर्त तक उच्च ही रहता है। इससे व्यक्ति रात को आराम से सोता है। ब्रह्म मुहूर्त के बाद (5:00 बजे से लेकर) सूर्योदय होते-होते यह स्रव कम हो जाता है। इससे ब्रह्ममुहूर्त में सहज और स्वाभाविक रूप से मन उतार चढाव आदि न होकर शांत और स्थिर रहता है। इस प्रक्रिया के दौरान मन सतर्क और शांत रहता हैं। शांत मन से ध्यानादि करने से पूरा दिन सहिष्णुता से कामों को निभा सकते हैं। मानसिक संतुलन को बनाए रखने से उच्च रक्तचाप नियंत्रण में रहता हैं; पाचन शक्ति में सुधार होता है जिससे पेट संबंधी समस्याओं से छुटकारा मिल सकता है।

कॉर्टिसोल का स्तर : तनाव से छुटकारा

कॉर्टिसोल तनाव का हार्मोन कहा जाता है। कॉर्टिसोल हॉर्मोन स्तर को नियंत्रित करने के लिए रात को अच्छी नींद की आवश्यकता है। ब्रह्ममुहूर्त के समय इस हार्मोन का स्तर बहुत कम होता है। जिन लोगों को तनाव, एंग्जयटी और डिप्रेशन की शिकायते हैं वे ब्रह्ममुहूर्त में उठकर योग, प्राणायाम आदि करने से कॉर्टिसोल नियंत्रित होकर चिंता और तनाव से राहत मिलती है।

सर्केडियन रिदम

सर्केडियन रिदम एक प्राकृतिक आंतरिक घड़ी है जो निद्रा और जागने के चक्र को नियंत्रित करती है। वह दिन और रात के चक्र से जुड़ी हुई होती है। अगर यह सर्केडियन लय ठीक से नहीं चलता है तो निद्राहीनता से संबंधित अनेक समस्याएँ सामने आती हैं। ब्रह्ममुहूर्त में जागने से हम अपने शरीर को प्रकृति के लय के साथ तादात्म्य करने से हमारा स्वास्थ्य पूर्णतः सुधर जाता है। सुबह जल्दी उठने से रात को आराम से नींद आती है।

हवा की गुणवत्ता

ब्रह्ममुहूर्त में वातावरण में प्रदूषण कम होकर प्राणवायु की उच्च सांद्रता होती है। इससे मंद-मंद बहने वाली वायु में गुणवत्ता सबसे अधिक होती है। आयुर्वेद में इस समय बहने वाली वायु को अमृततुल्य माना गया है। इस समय नींद से उठकर स्वच्छ वायु की सांस लेने से, अर्थात प्राणायाम आदि करने से तथा नियमित रूप से टहलने से फेफड़ों की ताकत बढ़ती है। रक्त में ऑक्सीजन बढ़ने से हीमोग्लोबिन बढ़कर शरीर की शक्ति बढ़ती है।

ब्रह्ममुहूर्त में दिनचर्या

ब्रह्ममुहूर्त में होने वाले शुभ परिवर्तनों के लिए नियमित रूप से इन क्रियाओं को करना चाहिए - हर रोज हमें सूर्योदय

से डेढ़ घंटे पहले उठाना चाहिए। आसानी से सुबह जल्दी उठने के लिए एक ही उपाय है रात को जल्दी सो जाना।

उठने के तुरंत बाद इस मंत्र का जाप करते हुए अपने हाथ को देखते हुए आंखें खोलनी चाहिए।

''कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती।
करमूले तु गोविन्दः प्रभाते करदर्शनम।।''

सुबह शुभ चिंतन से शरीर में सकारात्मक ऊर्जा के संचार से दिनभर उत्साह बना रहता हैं और दिन की चुनौतियों को हिम्मत से सामना करते हैं।

इसके बाद भगवान को तथा पंचभूतों को हृदयतापूर्वक हमारी कृतज्ञता प्रकट करनी चाहिए। क्योंकि उनकी कृपा से ही हम जीवित हैं।

फिर योगाभ्यास करनी चाहिए ताकि शरीर को शक्ति मिलती है और शरीर का लचीलापन बढ़ता है।

योगाभ्यास के बाद प्राणायाम का अभ्यास प्रतिदिन करना चाहिए जिससे फेफड़ों की शक्ति बढ़ती है और तनाव संबंधी समस्याओं से मुक्ति मिलती है।

प्राणायाम के बाद ध्यान करना चाहिए। दिमाग को सक्रिय रखने के लिए ध्यान एक बहुत ही महत्वपूर्ण क्रिया है। ध्यान से आध्यात्मिक रूप से हम स्वयं ब्रह्मांड से एक हो जाते हैं। हमें महसूस होने लगता है कि ब्रह्मांड की अद्वितीय शक्ति हमारे शरीर में प्रवाहित हो रही है। शरीर के कण-कण शक्तिमय और चैतन्यमय हो रहे हैं। ध्यान करते वक्त हमें अपने लक्ष्य का संकल्प लेने चाहिए। भविष्य में वहीं संकल्प साकार बनाता हैं। ध्यान के दौरान अंतर्मन शांत होने से मानसिक समस्याएँ दूर हो जाती हैं।

ब्रह्ममुहूर्त में नियमित रूप से उठकर ध्यान का अभ्यास करने पर मनुष्य में छिपी रचनात्मक शक्ति का विकास होता है। इतना ही नहीं ध्यान करते समय हम अपना आत्म विश्लेषण करने से अपनी कमजोरियों को जानकर उनको दूर करने का प्रयत्न करने से भविष्य उत्तम बनता है। ध्यान के बाद आध्यात्मिक पुस्तकों को पढ़ना चाहिए। आध्यात्मिक चिंतन से मानसिक क्लेश कम हो जाते हैं।

ब्रह्म मुहूर्त में वर्जित कार्य

ब्रह्म मुहूर्त में कुछ भी नहीं खाना चाहिए। ऐसा करने से व्यक्ति रोगी बन जाता हैं। दूसरों के साथ गपशप करके पवित्र समय का बर्बाद नहीं करना चाहिए। किसी भी प्रकार की नकारात्मक तथा तनावपूर्ण चिंतन नहीं करना चाहिए।

उपसंहार

ब्रह्म मुहूर्त एक ऐसा पवित्र समय है जिसमें सबका कल्याण निहित है। इससे इस काल का सदुपयोग वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक ऋषि-मुनियों तथा विश्व के अनेक गुरुजन अभ्यास करते आ रहे हैं। हर रोज इस पवित्र समय में प्राणायाम, ध्यान अदि साधनाओं को करना चाहिए। ताकि इस पवित्र समय की परिवर्तनकारी शक्ति से शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य सुधर जाता है।

हमें जीवन में शांति मिलती है तथा किसी भी विपरीत परिस्थिति को भी संतुलन से निभा सकते हैं। इस प्रकार ब्रह्ममुहूर्त में धार्मिक आचरण करने में वैज्ञानिकता भी निहित है। व्यक्तिगत विकास के साथ सामाजिक स्तर पर एक स्वस्थ समाज का निर्माण संभव होता है।

गतांक से

श्री रामानुज नूट्रन्दादि

मूल - श्रीरंगामृत कवि विरचित

प्रेषक - श्री श्रीराम मालपाणी

कलिमिक्क शेन्नेल् कळनि क्कुरैयल्, कलैप्पेरुमान्
ओलिमिक्क पाडलैयुण्डु तन्नुळ्ळम् तडित्तु, अदनाल्
वलिमिक्क शीय मिरामानुजन् मरै वादियराम्
पुलि मिक्कदेन्नु, इप्पुवनत्तिल् वन्दमै पोत्तुवने ॥८८॥

महितधान्यसंचयसंभृत 'कुरैयल्' स्थलावतीर्णविद्वद्वरेण्यकलिवैरिसूरि (परकालकवि) दिव्यसूक्ति भुक्तिभूम्ना परिपुष्टान्तःकरणस्तत एव समेधितप्रज्ञाबलो भगवद्रामानुजकण्ठीरवः 'वेददुर्वादकुशलकुदृष्टिव्याघ्रा बलिष्ठा अभूव' न्निति तद्दण्डनाय भुवनतलेऽवतीर्णः; तेदतदहं कीर्तयन् वर्ते॥ (श्री परकालमुनेरवतारस्थली तिरुक्कुरैयलूरिति प्रथितेति वेदितव्यम्॥)

अत्यधिक धान उपजनेवाले ''कुरैयल'' नामक स्थल में अवतीर्ण अप्रतिमविद्वान कलिवैरिसूरी (श्री परकालसूरी) से अनुगृहीत दिव्य श्रीसूक्तियों का अनुभव करके उससे पोषितचित्त एवं संप्राप्तज्ञानवाले श्री रामानुज स्वामीजी नामक सिंहराज, यों कहते हुए कि, ''इस धरातल पर वेदों का अपार्थ करनेवाले दुर्वादी रूप बाघ बहुत बढ गये'', (उन्हें दंड देने के लिए) यहाँ अवतीर्ण हुए। आपके इस यश का कीर्तन करूँगा। (विवरण - लोक में बहुत बढे हुए दुर्मतों का विनाश करने के लिए श्री रामानुज नामक सिंह का अवतार हुआ। उन्होंने, ''तिरुक्कुरैयलूर'' नाम से प्रसिद्ध दिव्यक्षेत्र में अवतीर्ण, अप्रतिम विद्वत्सार्वभौम, श्री परकालसूरी से अनुगृहीत छे दिव्यप्रबंधों का ठीक अध्ययन कर उससे ज्ञान-वैशद्य प्राप्त किया।)

लोक में बहुत बढ़े हुये दुर्मतों का विनाश करने के लिये
श्री रामानुज स्वामीजी नामक सिंह का अवतार हुआ।

क्रमशः

तिरुमल तिरुपति देवस्थान
तिरुपति

श्रीदेवी भूदेवी सहित श्री मलयप्पस्वामीजी, तिरुमल

जनवरी 2025

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

फरवरी 2025

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	

मार्च 2025

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
30	31					1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

जनवरी 2025

01 नूतन अंग्रेजी वर्ष
06-12 श्री आंडाल नीराट्टोत्सव
08-12 तिरुपति श्री कपिलेश्वरस्वामी का प्लवोत्सव
10 वैकुंठएकादशी
11 श्री स्वामिपुष्करिणीतीर्थ मुक्कोटी
13 भोगी
14 मकर संक्रांति
15 कनुमा, श्री गोदादेवी का परिणयोत्सव
26 भारत गणतंत्र दिवस
29 से फरवरी 06 तक देवुनिकड़पा श्री लक्ष्मीवेंकटेश्वरस्वामी का ब्रह्मोत्सव

फरवरी 2025

03 वसंतपचंमी
04 रथसप्तमी
06-12 तिरुपति श्री गोविंदराजस्वामी का प्लवोत्सव
08 भीष्म एकादशी
12 श्री रामकृष्णतीर्थ मुक्कोटी
18-26 श्रीनिवासमंगापुरम् श्री कल्याण वेंकटेश्वरस्वामी का ब्रह्मोत्सव
19-28 तिरुपति श्री कपिलेश्वरस्वामी का ब्रह्मोत्सव
26 महाशिवरात्रि

मार्च 2025

06-14 तरिगोंडा श्री लक्ष्मीनरसिंहस्वामी का ब्रह्मोत्सव
09-13 तिरुमल श्री बालाजी का प्लवोत्सव
14 श्री लक्ष्मीजयंती, होली, श्री कुमारधारातीर्थ मुक्कोटी
26 अन्नमाचार्य वर्धंती
24-28 नागुलापुरम् श्री वेदनारायणस्वामी का प्लवोत्सव और सूर्यपूजा
27 से अप्रैल 04 तक तिरुपति श्री कोदंडरामस्वामी का ब्रह्मोत्सव
30 'श्री विश्वावसु' नामक तेलुगु नूतन वर्ष-उगादि
31 मत्स्य जयंती

तिरुमल तिरुपति देवस्थान
तिरुपति

श्रीदेवी भूदेवी सहित श्री गोविंदराजस्वामीजी, तिरुपति

अप्रैल 2025

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30			

मई 2025

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

जून 2025

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30					

अप्रैल 2025

03-11 वायल्पाडु श्री पट्टाभिरामस्वामी का ब्रह्मोत्सव
06-14 ओंटिमिट्टा श्री कोदंडरामस्वामी का ब्रह्मोत्सव
06 श्रीरामनवमी
10-12 तिरुमल श्री बालाजी का वसंतोत्सव,
तिरुपति श्री कोदंडरामस्वामी का प्लवोत्सव
12 श्री तुंबुरुतीर्थ मुक्कोटी
13-21 नागुलापुरम्
श्री वेदनारायणस्वामी का ब्रह्मोत्सव
14 तमिल नूतन वर्ष, डॉ.बी.आर.अंबेडकर जयंती
30 श्री परशुराम जयंती, अक्षयतृतीया,
श्री सिंहाचल क्षेत्र में चंदनोत्सव

मई 2025

02 श्री रामानुज जयंती, श्री शंकर जयंती
06-08 तिरुमल श्री पद्मावती श्रीनिवास का परिणयमहोत्सव
09-12 तिरुचानूर श्री पद्मावतीदेवी का वसंतोत्सव
11 श्री नृसिंह जयंती, तरिगोंडा वेंगमांबा जयंती
11-19 ऋषिकेश, नारायणवनम्
श्री कल्याण वेंकटेश्वरस्वामी का ब्रह्मोत्सव
12 श्री कूर्म जयंती, श्री अन्नमय्या जयंती
13 तिरुपति गंगजातरा (मेला)
15 श्री सरस्वती नदी का पुष्कर प्रारंभ
19-27 कार्वेटिनगरम् श्री वेणुगोपालस्वामी का ब्रह्मोत्सव
22 हनुमज्जयंती

जून 2025

02-10 तिरुपति श्री गोविंदराजस्वामी का ब्रह्मोत्सव
06-10 तिरुचानूर श्री पद्मावतीदेवी का प्लवोत्सव
07-15 अप्पलायगुंटा
श्री प्रसन्न वेंकटेश्वरस्वामी का ब्रह्मोत्सव
09-11 तिरुमल श्री बालाजी का ज्येष्ठाभिषेक
17-19 तिरुचानूर श्री सुंदरराजस्वामी का
अवतारोत्सव
30 से जुलाई 02 तक श्रीनिवासमंगापुरम्
श्री कल्याण वेंकटेश्वरस्वामी का
साक्षात्कार वैभवोत्सव

तिरुमल तिरुपति देवस्थान
तिरुपति

श्रीदेवी भूदेवी सहित श्री कल्याण वेंकटेश्वरस्वामीजी, श्रीनिवासमंगापुरम्

जुलाई 2025

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

अगस्त 2025

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
31					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

सितंबर 2025

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30				

जुलाई 2025

06 तोलि (पहला) एकादशी, चातुर्मास्य व्रत आरंभ
06-08 तिरुपति श्री गोविंदराजस्वामी का ज्येष्ठाभिषेक
06-09 तिरुपति श्री कपिलेश्वरस्वामी का पवित्रोत्सव
10 गुरुपूर्णिमा, व्यासपूर्णिमा
16 तिरुमल भगवानजी का आणिवर आस्थान
19-22 तिरुपति श्री कोदंडरामस्वामी का पवित्रोत्सव
28 नागचतुर्थी
29 गरुडपंचमी

अगस्त 2025

02 मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा वर्धंति
04-07 तिरुमल श्री बालाजी का पवित्रोत्सव
08 वरलक्ष्मी व्रत
09 श्री विखनस महामुनि जयंती, राखी, श्री हयग्रीव जयंती
10 गायत्रीजपम्
15 भारत स्वतंत्रता दिवस
16 श्रीकृष्णाष्टमी, गोकुलाष्टमी
25 श्री बलराम जयंती, श्री वराह जयंती
27 श्री गणेश चतुर्थी
28 ऋषिपंचमी

सितंबर 2025

04 श्री वामन जयंती
04-07 तिरुचानूर श्री पद्मावतीदेवी का पवित्रोत्सव
06 श्री अनंतपद्मनाभव्रत
08 महालय पक्ष प्रारंभ
22 देवीनवरात्रि उत्सव आरंभ
24 से अक्तूबर 02 तक तिरुमल श्री वेंकटेश्वरस्वामी का ब्रह्मोत्सव
24 से अक्तूबर 02 तक तिरुचानूर श्री पद्मावतीदेवी का नवरात्रि उत्सव
28 तिरुमल श्री बालाजी का गरुडसेवा
29 सरस्वतीपूजा
30 दुर्गाष्टमी

तिरुमल तिरुपति देवस्थान
तिरुपति

श्रीदेवी भूदेवी सहित श्री प्रसन्न वेंकटेश्वरस्वामीजी, अप्पलायगुंटा

अक्तूबर 2025

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

नवंबर 2025

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
30						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

दिसंबर 2025

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

अक्तूबर 2025

01 महानवमी
02 विजयदशमी, गांधी जयंती
16-19 श्रीनिवासमंगापुरम्
श्री कल्याण वेंकटेश्वरस्वामी का पक्रोत्सव
20 नरक चतुर्दशी, दीपावली,
तिरुमल में दीपावली आस्थान
21 श्री केदारगौरीव्रत
25 नागुलचविति
29-30 तिरुमल श्री बालाजी का पुष्पयाग

नवंबर 2025

02 कैशिकद्वादशी, क्षीराब्धि द्वादशी
14 बाल दिवस
17-25 तिरुचानूर श्री पद्मावतीदेवी का ब्रह्मोत्सव
17 श्री धन्वन्तरी जयंती
21 तिरुचानूर श्री पद्मावतीदेवी का
गजवाहन सेवा
25 पंचमीतीर्थ
26 तिरुचानूर श्री पद्मावतीदेवी का
पुष्पयाग, सुब्रह्मण्य षष्ठी

दिसंबर 2025

01 श्री गीताजयंती
02 श्री चक्रतीर्थ मुक्कोटी
03 तिरुपति श्री कपिलेश्वरस्वामी का
कृत्तिका दीपोत्सव, हनुमद् व्रत
04 श्री दत्तजयंती, श्री कपिलतीर्थ मुक्कोटी
16 धनुर्मास आरंभ
19 तिरुमल श्री बालाजी के सन्निधि में
अध्ययनोत्सव आरंभ
29 तिरुपति श्री कपिलेश्वरस्वामी का ध्वजोत्सव प्रारंभ
30 वैकुंठएकादशी
31 श्री स्वामिपुष्करिणीतीर्थ मुक्कोटी

ऋषि-मुनि

महर्षि दधीचि

- डॉ.जी.सुजाता

दधीचि प्राचीन काल के परम तपस्वी और ख्याति प्राप्त महर्षि थे। उनकी पत्नी का नाम 'गभस्तिनी' था। महर्षि दधीचि वेद शास्त्रों आदि के पूर्ण ज्ञाता और स्वभाव के बड़े ही दयालु थे। अहंकार तो उन्हें छू तक नहीं पाया था। वे सदा दूसरों का हित करना अपना परम धर्म समझते थे। उनके व्यवहार से उस वन के पशु-पक्षी तक संतुष्ट थे, जहाँ वे रहते थे। गंगा के तट पर ही उनका आश्रम था। जो भी अतिथि महर्षि दधीचि के आश्रम पर आता, स्वयं महर्षि तथा उनकी पत्नी अतिथि की पूर्ण श्रद्धा भाव से सेवा करते थे। यूँ तो 'भारतीय इतिहास' में कई दानी हुए हैं, किंतु मानव कल्याण के लिए अपनी अस्थियों का दान करने वाले मात्र महर्षि दधीचि ही थे। देवताओं के मुख से यह जानकर की मात्र दधीचि की अस्थियों से निर्मित वज्र द्वारा ही असुरों का संहार किया जा सकता है, महर्षि दधीचि ने अपना शरीर त्याग कर अस्थियों का दान कर दिया।

परिचय

लोककल्याण के लिये आत्म-त्याग करने वालों में महर्षि दधीचि का नाम बड़े ही आदर के साथ लिया जाता है। दधीचि वैदिक ऋषि थे। इनके जन्म के संबंध में अनेक कथाएँ हैं। यास्क के मतानुसार दधीचि की माता 'चित्ति' और पिता 'अथर्वा' थे, इसीलिए इनका नाम 'दधीचि' हुआ था। किसी पुराण के अनुसार यह कर्दम ऋषि की कन्या 'शांति' के गर्भ से उत्पन्न अथर्वा के पुत्र थे। अन्य पुराणानुसार यह शुक्राचार्य के पुत्र थे। महर्षि दधीचि तपस्या और पवित्रता की प्रतिमूर्ति थे। भगवान शिव के प्रति अटूट भक्ति और वैराग्य में इनकी जन्म से ही निष्ठा थी। दधीचि जी ने अपने संपूर्ण जीवन में भगवान शिव की कठोर भक्ति की थी और इसी कठोर भक्ति के कारण उनका शरीर भी अत्यंत कठोर बन गया था।

कथा

कहा जाता है कि एक बार इन्द्रलोक पर 'वृत्रासुर' नामक राक्षस ने अधिकार कर लिया तथा इन्द्र सहित देवताओं को देवलोक से निकाल दिया। सभी देवता अपनी व्यथा लेकर ब्रह्म, विष्णु व महेश के पास गए, लेकिन कोई भी उनकी समस्या का निदान न कर सका। बाद में ब्रह्माजी ने देवताओं को एक उपाय बताया कि पृथ्वी लोक में 'दधीचि' नाम के एक महर्षि रहते हैं। यदि वे अपनी अस्थियों का दान कर दें तो उन अस्थियों से एक वज्र बनाया जाये। क्योंकि ऋषि को शिव के वरदान स्वरूप मजबूत देह का वरदान प्राप्त था अतः उनकी हड्डीयों से निर्मित अस्त्र द्वारा ही वृत्रासुर को मारा जा सकता था। महर्षि दधीचि की अस्थियों में ही वह ब्रह्म तेज है, जिससे वृत्रासुर राक्षस मारा जा सकता है। इसके अतिरिक्त और कोई दूसरा उपाय नहीं है।

इन्द्र का संकोच

देवराज इन्द्र महर्षि दधीचि के पास जाना नहीं चाहते थे, क्योंकि इन्द्र ने एक बार दधीचि का अपमान किया था, जिसके कारण वे दधीचि के पास जाने से कतरा रहे थे। माना जाता है कि ब्रह्म विद्या का ज्ञान पूरे विश्व में केवल महर्षि दधीचि को ही था। महर्षि मात्र विशिष्ट व्यक्ति को ही इस विद्या का ज्ञान देना चाहते थे, लेकिन इन्द्र ब्रह्म विद्या प्राप्त करने के परम इच्छुक थे। दधीचि की दृष्टि में इन्द्र इस विद्या के पात्र नहीं थे। इसलिए उन्होंने इन्द्र को इस विद्या को देने से मना कर दिया। दधीचि के इनकार करने पर इन्द्र ने उन्हें

किसी अन्य को भी यह विद्या देने को मना कर दिया और कहा कि- ''यदि आपने ऐसा किया तो मैं आपका सिर धड़ से अलग कर दूँगा।'' महर्षि ने कहा कि- ''यदि उन्हें कोई योग्य व्यक्ति मिलेगा तो वे अवश्य ही ब्रह्म विद्या उसे प्रदान करेंगे।'' कुछ समय बाद इन्द्रलोक से ही अश्विनीकुमार महर्षि दधीचि के पास ब्रह्म विद्या लेने पहुँचे।

दधीचि को अश्विनीकुमार ब्रह्म विद्या पाने के योग्य लगे। उन्होंने अश्विनीकुमारों को इन्द्र द्वारा कही गई बातें बताई। तब अश्विनीकुमारों ने महर्षि दधीचि के अश्व का सिर लगाकर ब्रह्म विद्या प्राप्त कर ली। इन्द्र को जब यह जानकारी मिली तो वह पृथ्वी लोक में आये और अपनी घोषणा के अनुसार महर्षि दधीचि का सिर धड़ से अलग कर दिया। अश्विनीकुमारों ने महर्षि के असली सिर को फिर से लगा दिया। इंद्र ने अश्विनीकुमारों को इंद्रलोक से निकाल दिया। यही कारण था कि अब इन्द्र महर्षि दधीचि के पास उनकी अस्थियों का दान माँगने के लिए आना नहीं चाहते थे। वे इस कार्य के लिए बड़ा ही संकोच महसूस कर रहे थे।

दधीचि द्वारा अस्थियों का दान

देवलोक पर वृत्रासुर राक्षस के अत्याचार दिन-प्रदिदिन बढ़ते ही जा रहे थे। वह देवताओं को भांति-भांति से परेशान कर रहा था। अन्ततः देवराज इन्द्र को इन्द्रलोक की रक्षा व देवताओं की भलाई के लिए और अपने सिंहासन को बचाने के लिए देवताओं सहित महर्षि दधीचि की शरण में जाना ही पड़ा। महर्षि दधीचि ने इन्द्र को पूरा सम्मान दिया तथा आश्रम आने का कारण पूछा। इन्द्र ने महर्षि को अपनी व्यथा सुनाई तो दधीचि ने कहा कि- ''मैं देवलोक की रक्षा के लिए क्या कर सकता हूँ।'' देवताओं ने उन्हें ब्रह्म, विष्णु व महेश की कहीं हुई बातें बताई तथा उनकी अस्थियों का दान माँगा। महर्षि दधीचि ने बिना किसी हिचकिचाहट के अपनी अस्थियों का दान देना स्वीकार कर लिया। उन्होंने समाधी लगाई और अपनी देह त्याग दी। उस समय उनकी पत्नी आश्रम में नहीं थी। अब देवताओं के समक्ष ये समस्या आई कि महर्षि दधीचि के शरीर के माँस को कौन उतारे। इस कार्य के ध्यान में आते ही सभी देवता सहम गए। तब इन्द्र ने कामधेनु गाय को बुलाया और उसे महर्षि के शरीर से मांस उतारने को कहा। कामधेनु ने अपनी जीभ से चाट-चाटकर महर्षि के शरीर का माँस उतार दिया। अब केवल अस्थियों का पिंजर रह गया था।

गभस्तिनी की जिद

महर्षि दधीचि ने तो अपनी देह देवताओं की भलाई के लिए त्याग दी, लेकिन जब उनकी पत्नी 'गभस्तिनी' वापस आश्रम में आई तो अपने पति की देह को देखकर विलाप करने लगी तथा सती होने की जिद करने लगी। तब देवताओं ने उन्हें बहुत मना किया, क्योंकि वह गर्भवती थी। देवताओं ने उन्हें अपने वंश के लिए सती न होने की सलाह दी। लेकिन गभस्तिनी नहीं मानी। तब सभी ने उन्हें अपने गर्भ को देवताओं को सौंपने का निवेदन किया। इस पर गभस्तिनी राजी हो गई और अपना गर्भ देवताओं को सौंपकर स्वयं सती हो गई।

देवताओं ने गभस्तिनी के गर्भ को बचाने के लिए पीपल को उसका लालन-पालन करने का दायित्व सौंपा। कुछ समय बाद वह गर्भ फलकर शिशु हुआ तो पीपल द्वारा पालन-पोषण करने के कारण उसका नाम 'पिप्पलाद' रखा गया। इसी कारण दधीचि के वंशज 'दाधीच' कहलाते हैं।

देवताओं की विजय

इन्द्र ऋषि दधीचि की अस्थियों को लेकर विश्वकर्मा के पास गये। विश्वकर्मा ने उन अस्थियों से वज्र का निर्माण

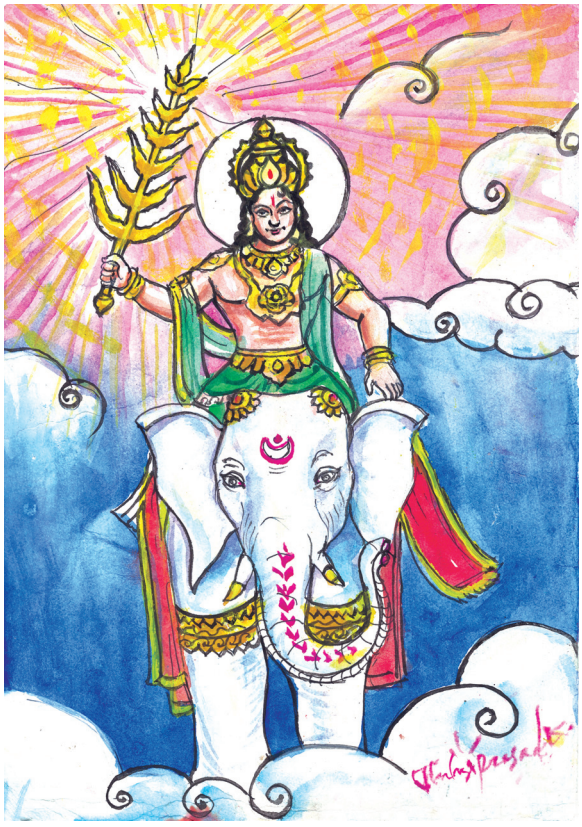

किया और इन्द्र को दे दिया। अब एक बार फिर से देवताओं और दैत्यों में भयंकर युद्ध हुआ। हजारों की संख्या में दैत्य, दानव, यक्ष आदि लड़ने को सामने आये। उस वज्र से सब राक्षस और दानव मारे गये। वृत्रासुर ने अपना त्रिशूल फेंका और गदा से देवराज इन्द्र के वाहन ऐरावत पर आक्रमण किया। ऐरावत के सिर पर चोट आई, परंतु इन्द्र ने अपनी विद्या से ऐरावत के माथे की चोट को ठीक कर दिया। फिर वृत्रासुर पर आक्रमण किया। कुछ समय बाद इन्द्र के हाथ से छूटकर वज्र युद्ध भूमि में गिर गया। वृत्रासुर बोला- ''जिस प्रकार तुमने विश्वरूप का सिर काटा था, उसी तरह मैं तेरा सिर काटकर अपने भाई का बदला लूँगा। भूतनाथ पर तुम्हारे सिर को चढ़ाऊँगा।'' इन्द्र ने कहा कि ''युद्ध एक प्रकार का जुआ है। इसमें प्राणों की बाजी लगती है। बाण पासे का काम करते हैं और वाहन ही चौसर है। इसलिए इसमें यह पता नहीं चलता कि कौन विजयी होगा?'' इस प्रकार इन्द्र ने आदरभाव से वृत्रासुर को बातों में लगाकर मौका पाकर अपना वज्र उठा लिया और वृत्रासुर का सिर काट कर उसकी इह लीला समाप्त कर दी। उसके मारे जाने पर देवताओं ने प्रसन्नता प्रकट करते हुए इन्द्र पर फूलों की वर्षा की। वृत्रासुर की ज्योति उसके शरीर से निकल कर भगवान में लीन हो गई।

प्रतिवर्ष भाद्रपद माह की शुक्ल अष्टमी को दधीचि जयंती के रूप में मनाया जाता है। भारतीय पुराणों के अनुसार भारतवर्ष में अनेकों ऋषि-मुनियों ने यहाँ जन्म लिया था और अपना सारा जीवन लोगों की भलाई में व्यतीत कर दिया। उन्हीं महान ऋषियों में एक दधीचि ऋषि भी हुए हैं जिन्होंने लोगों की भलाई के लिए अपने शरीर को त्याग दिया।

महर्षि दधीचि को उनके त्याग के लिये आज भी लोग श्रद्धा से याद करते हैं। नैमिषारण्य में प्रतिवर्ष फाल्गुन माह में उनकी स्मृति में मेले का आयोजन होता है। यह मेला महर्षि के त्याग और मानव सेवा के भावों की याद दिलाता है।

श्री वेंकटेश्वर परब्रह्मणे नमः

हिन्दू होने के नाते गर्व कीजिए!

* ललाट पर अपने इच्छानुसार (चंदन, भस्म, नामम्, कुंकुम) तिलक का धारण करें।
* नहाने के बाद निम्न भगवन्नामों में से किसी एक का एक पर्याय में १०८ बार जप करें।

श्री वेंकटेशाय नमः।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो नारायणाय।

(गतांक से)

श्रीवैष्णव दिव्यदेश-108

- श्रीमती विजया कमलकिशोर तापडिया

4) उत्तर के दिव्य क्षेत्र - 11

सामान्य बातें - उत्तर के 11 दिव्य क्षेत्र वैष्णव दिव्य क्षेत्र होने पर भी - यहाँ की पूजा पद्धति दक्षिण के मंदिरों से भिन्न है। (यहाँ आगम पद्धति का अनुकरण नहीं करते)।

अपने दिव्य पदों में आल्वार का उल्लिखित भगवान व माताजी का नाम यहाँ प्रचलित नहीं है। दिव्य क्षेत्र का नाम तिरुपिरुति एवं तिरुकण्डम कडिनगर यहाँ प्रचलित नहीं है। प्रचलित नाम जोषीमठ (तिरुपिरुति), एवं देव प्रयाग (तिरुकण्डम कडिनगर) नाम दो यहाँ प्रचलित हैं। यहाँ के मंदिरों में आल्वार द्वारा अनुगृहीत 4000 दिव्य प्रबन्ध का पाठ नहीं होता और उससे वे परिचित नहीं है। हाँ दक्षिण की शैली पर निर्मित एक-दो मंदिरों में दक्षिण-पथ जाता है। जैसे रंगमन्नार मंदिर-बृन्दावन। दक्षिण की तरह अर्चना की परंपरा भी यहाँ नहीं। लगभग 1500 वर्ष पहले नहीं है। यह उल्लेखनीय है। आल्वार द्वारा मंगलाशासित मंदिर शायद विदेशी आक्रमणकारियों ने नष्ट भ्रष्ट कर लूट लिया है। मूर्ति भी आजकल नहीं दीखता। यहाँ सबेरे एवं शायं को आरती होती है। प्रसाद के रूप में तीर्थ एवं तुलसी देते हैं। यहाँ पुण्य तीर्थ (पवित्र नदी-पुष्करिणी) का महत्व दीखता हैं।

65) उत्तर के दिव्य क्षेत्र - अयोध्या (उ.प्र.)

मोगलसराय - वाराणसि - लखनऊ - नई दिल्ली रेल मार्ग में अयोध्या (उत्तर प्रदेश) रेल्वे स्टेशन है। यहाँ सब तरह की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। यह मुक्ति प्रदायक सात क्षेत्रों में से एक है।

यहाँ कई मंदिर हैं। सरयू नदी किनारे 'अम्माजी मंदिर' नाम से एक प्राचीन मंदिर है। यह ऐतिहासिक सत्य है कि यहाँ की राम, लक्ष्मण, सीता आंजनेय(हनुमान) की मूर्तियाँ पहले धनुष्कोटि (रामेश्वरम) में थीं। स्वप्न में - (अन्तर्दृष्टि) एक नेपाली महिला को इसका बोध हुआ। इस महिला को धनुष्कोटि में निश्चि स्थान पर वे पंचलोह मूर्तियाँ मिली। अपने

स्वप्न में (अन्तर्दृष्टि) के अनुसार उन मूर्तियों को अयोध्या लाकर प्रतिष्ठा की (लगभग 700 वर्ष पूर्व) यह मंदिर दक्षिणी शैली की है और आराधना भी आगम शास्त्र के अनुसार-दक्षिण के अर्चकों के द्वारा किया जाता हैं। उत्तराभिमुखी-खडे दर्शन देते हैं। श्रीरंगनाथन सन्निधि एवं रामन सन्निधि है।

मूलमूर्ति - श्रीरामचंद्र मूर्ति - उत्तराभिमुखी आसीनस्थ दर्शन देते हैं।

तायार (माताजी) - सीता देवी।

तीर्थ - परमपद सत्य पुष्करिणी, सरयू नदी।

विमान - पुष्कल विमान।

प्रत्यक्ष - भरताल्वान, देव एवं मुनि गण।

विशेष - कहा जाता है कि आजकल यहाँ आल्वार द्वारा मंगलाशासित मंदिर आदि अब नहीं है। यहाँ हनुमान गढी मंदिर है। यहाँ विराजमान हनुमान बडे वर प्रसादी हैं। यहाँ रामजन्म भूमि में राम लल्ला के दर्शन कर सकते हैं।

मंगलशासन - तीन आल्वार, कुल 11 दिव्य पद।

मेइन रोड में हनुमान गढी के पास सुग्रीव किला है जहाँ अयोध्या संबंधी कुछ आल्वार दिव्य पदों (संगमरमर में) अंकित शिलालेख - (मूल तमिल पद देवनागरी लिपि में हिन्दी भावार्थ सहित) स्थापित हैं।

इसका प्रबन्ध-श्रीरंगम श्रीमदाण्डवन आश्रम के प्रवृत आण्डवन के आदेशानुसार - उनके अनुग्रह से स्थापित हैं।

66) तिरुनैमिशारण्यम - (नैमिशार क्षेत्र) (उ.प्र.)

लखनऊ से सीतापुर जाकर - वहाँ से नैमिश पहुँच सकते हैं। या कलकत्ता - डेराडून मार्ग में पालमान् रेल्वे स्टेशन (जंगशन) पहुँचकर यहाँ से सीतापुर जाने वाली रेल में जा सकते हैं। (सीतापुर से लगभग 25 कि.मी.)।

मूलमूर्ति - देवराजन (श्रीहरि) खडे पूर्वाभिमुखी दर्शन देते हैं।

तायार (माताजी) - श्रीहरिलक्ष्मी (पुण्डरीकवल्ली)।

तीर्थ - चक्रतीर्थ, गोमुखी (गोमती) नदी। नेमि, दिव्य विक्रानत तीर्थ।

स्थल वृक्ष - तपोवन।

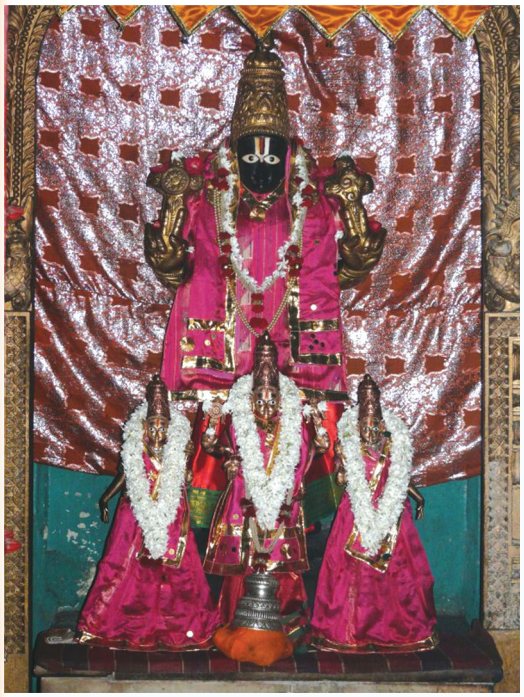

विमान - श्रीहरि विमान।

प्रत्यक्ष - इन्द्र, सुधर्मा, देवऋषि, सूत पुराणिक, वेदव्यास।

विशेष - यहाँ भगवान के अरण्य रूप में दर्शन करने की परंपरा है। चक्रतीर्थ के किनारे पर कई सन्निधियाँ है।

निकट अहोबिल मठ है जहाँ देवनारविलाकम् अळहिय सिंगर का बृन्दावन है। गोमुखि नदी रास्ते में व्यास गद्दी स्थान पर वेदव्यास का मंदिर है। यह विश्वास है कि यहीं पर वेदव्यास ने महाभारतम एवं भागवत की रचना की।

(श्रीदेवी, भूदेवी सहित देवराजन पूर्वाभिमुखी खडे दर्शन देते हैं। यहाँ चक्रतीर्थ जाने के रास्ते में रामानुज मठ-प्राचीन नैमिशनाथ मंदिर है। यहाँ तिरुमंगैयाल्वार एवं रामानुज की सन्निधि हैं। इस मंदिर में नैमिशारण्यम संबंधी आल्वार दिव्य पदों का (11) एवं आचार्यों का तमिल (हिन्दी भावार्थ सहित) संगमरमर पर अंकित शिलालेखों की स्थापना हुई है। इसका प्रबन्ध श्रीरंगनाथ श्रीमदाण्डवन आश्रम के प्रकृत आण्डवन के आदेशानुसार एवं उनके अनुग्रह से स्थापित हैं।)

यह विखनसाचार्य का जन्म स्थल है। पुराना मंदिर नामक शुक्र भगवान का मंदिर है। यहाँ शुक्र भगवान की मूर्ति स्थापित है। आगे एक छोटी पहाड़ी पर हनुमान गढी है - जहाँ हनुमान की बृहत बडी मूर्ति हैं। अभी हाल में यहाँ बालाजी मंदिर का निर्माण हुआ है एवं भूदेवी, श्रीदेवी समेत श्री वेंकटाचलपति भगवान दर्शन देते हैं।

मंगलाशासन - एक आल्वार, 10 दिव्य पद।

विशेष - आल्वार द्वारा मंगलाशासित मंदिर अब नहीं दीखता।

67) तिरुपिरुति - (जोषी मठ) नन्द प्रयाग, उ.प्र.

यह माना जाता है कि यह क्षेत्र हरिद्वार - ऋषीकेश से बद्रीनाथ जाने के मार्ग में हैं। हरिद्वार से 246 कि.मी. पर है। बस की सुविधा है। समुद्र तल से 6150 फुट ऊँचाई पर स्थित है। तिरुपिरुति एक दूसरा मत है कि यह क्षेत्र आल्वार द्वारा मंगलाशासित बद्रीनाथ के आगे है। लेकिन आल्वार द्वारा मंगलाशासित मंदिर अब नहीं दीखता है।

मूलमूर्ति - परमपुरुष, भुजंगशयन पूर्वाभिमुखी दर्शन।

तायार (माताजी) - परिमलवल्लि नाच्चियार।

तीर्थ - इन्द्र तीर्थ, गोवर्धन तीर्थ, मानसरोवर।

विमान - गोवर्धन विमान।

प्रत्यक्ष - पार्वती।

विशेष - आदिशंकर द्वारा निर्मित नरसिंह मंदिर एवं वासुदेव मंदिर है। शंकर भगवान ने यहाँ ज्योतिषि पीठ की स्थापना कर-तपस्या कर ज्ञान प्राप्त किया। शंकर भाष्य की रचना की। समुद्रतल से 6150 फुट ऊँचाई पर है।

मंगलाशासन - एक आल्वार, 10 दिव्य पद।

68) तिरुक्कण्डम कडिनगर (देवप्रयाग) - श्री रवेड क्षेत्र।

हरिद्वार - ऋषीकेश बदरीनाथ मार्ग में ऋषीकेश से 70 कि.मी. पर गंगा किनारे (अलकनन्दा एवं भागीरती का संगम) है। जो यहाँ से यह अलकनन्दा-गंगा के नाम से बहती है। समुद्र तट से 1700 फुट ऊँचाई पर। बस की सुविधा है। कहा जाता है कि चार पांच पीढियों के पहले आन्ध्रा के प्रयाग यहाँ बसे थे। यहाँ रघुनाथ जी मंदिर है जो आल्वार मंगलाशासित हैं।

मूलमूर्ति - नीलमेघपेरुमाल, (पुरुषोत्तमन्) पूर्वाभिमुखी खडे दर्शन देते हैं।

तायार (माताजी) - पुण्डरीकवल्ली।

तीर्थ - मंगल तीर्थ, गंगा नदी।

विमान - मंगल विमान।

प्रत्यक्ष - भरद्वाज मुनि।

मंदिर के पीछे एक हनुमान सन्निधि है। यहाँ कई ऋषि-मुनियों की तपस्या भूमि है। मंदिर के पास बदरी नाथ, काल भैरवर, महादेवर हनुमान की मूर्तियाँ हैं।

आल्वार द्वारा मंगलाशासित एक आल्वार - 11 दिव्य पद।

यहाँ तिरुक्कण्डम कडिनगर संबन्धी 11 दिव्य क्षेत्रों का देवनागरी लिपि में संगमरमर पर (हिन्दी भावार्थ सहित) अंकित पर शिलालेख स्थापित किया जा रहा है।

इसका प्रबन्ध श्रीरंगम श्रीमदाण्डवन आश्रम के प्रकृत आण्डवन के आदेश एवं उनके अनुग्रह से स्थापित हो गया हैं। कहा जाता है कि यहाँ पेरियाल्वार की एक मूर्ति थी।

क्रमशः

मिथ की महिला चरित

अंजना देवी

- डॉ.के.एम.भवानी

हनुमान अंजना सूनुहू वायुपुत्रो महाबलः

अंजनी पुत्र पवन सुत नामा

रामायण को जिसके बिना हम सपने में भी नहीं सोच सकते हैं, जिसकी मूर्तियाँ पूरे भारत देश में सर्वत्र (छोटे से छोटे गाँव में भी) देखने को मिलती हैं, जिसे साहस और बल का प्रति रूप माना जाता है, उस महान राम भक्त हनुमान की माता ही अंजना देवी है। अंजना के पुत्र होने के कारण ही हनुमान (आंजनेय) कहलाया गया।

वानर राजा सुग्रीव के आदेशानुसार युवराज अंगद के नेतृत्व में कुछ वानर माता सीता को ढूँढने दक्षिण दिशा की ओर निकलते हैं। पक्षी संपाति द्वारा उन्हें पता चलता है कि सीता माता रावण के लंका नगर में है। सौ योजनों के विस्तीर्ण वाले सागर को पार करने से ही लंका में पहुँच सकते हैं।

इस बात पर सागर पार करने के लिए जब वानर अपने-अपने ताकत के बारे में बताते समय हनुमान चुप रहना देखकर जांबवान उसे सागर पार करने को प्रेरित करते है और हनुमान को अपने जन्म वृत्तांत के बारे में याद दिलाते हैं। वाल्मीकि रामायण के किष्किंधाकांड के अनुसार पुंजिकस्थला एक अप्सरा है। वह बहुत ही रूपवती है। कारणवश वह पृथ्वी पर वानर कुल में अंजना नाम से पैदा होती है। वह शाप के कारण वानर कुल में वानर राज कंजर की पुत्री के रूप में जन्म लेती है लेकिन उसमें यह शक्ति है कि वह अपने मन के अनुसार समय-समय पर अपने रूप को बदल सकती है। बड़ी होने पर वानर राज केसरी से उसकी शादी हो जाती है।

एक दिन अंजना मानव का रूप धारण करके सफेद रेशमी कपड़े पहन कर, फूल मालाओं से सज-धज कर पर्वत शिखरों पर विहरण करती रहती है। तब विशाल नेत्रों से चाँद जैसे सुंदर दिखनेवाली उसे देखकर वायु भगवान उससे मोहित हो जाता है और अपने लंबे हाथों से उसे आलिंगन करता है। इससे अंजना बहुत घबराकर पूछती है कि ''मेरी सतीत्व को भंग करनेवाली तुम कौन हो?'' तब वायुदेव उससे कहता है कि ''हे सुंदरी! मेरे कारण तुम्हारा सतीत्व भंग नहीं हुआ है। मैं तुम्हें कभी भी हानि नहीं पहुँचाऊँगा। मैं तुम्हें आलिंगन करके मानसिक रूप से ही भोग किया हूँ। इससे तुम्हारे सतीत्व को कोई भंग नहीं हुआ है। मगर इस मानसिक संगम के कारण तुम्हें एक पुत्र पैदा होता है। वह मेरे जैसे अत्यंत बलवान और पराक्रमवान होगा।'' यह सुनकर अंजना देवी बहुत खुश हो जाती है। बाद में वह एक पर्वत गुफा में जाकर हनुमान को जनम देती है।

अंजना देवी का तिरुमल से संबंध :

कलियुग के प्रत्यक्ष भगवान बालाजी जहाँ स्थित है, वह तिरुमल सात पहाडों का समाहार है, इसीलिए भगवान श्रीनिवास (एडुकोंडलवाडु) माने सात-पहाडवाला स्वामी नाम से जगत विख्यात है। उन सात पहाड़ों में एक पहाड़ का नाम 'अंजनाद्री' है। माता अंजना के नाम से ही उस पहाड़ का नाम अंजनाद्री पड़ा क्योंकि माता अंजना पुत्र संतान की प्राप्ति के लिए जिस पहाड़ पर घोर तप करके सफल हुई, उस पहाड़ अंजना के नाम पर अंजनाद्री के रूप में विख्यात है।

स्कांद पुराण के अंतर्गत वेंकटाचल माहात्म्यम् में अंजना की कहानी इस प्रकार वर्णित है। एक दिन पहाड़ पर तप करने वाली अंजना देवी को देखकर मतंग महर्षि प्यार से उससे पूछता है कि वह तप क्यों कर रही है? तब अपने बारे में बताते हुए अंजना कहती है कि ''महर्षि! मेरे पिता महान शिव भक्त है।

वह पुत्र प्राप्ति के लिए तप करने पर शिव भगवान प्रत्यक्ष होकर उसे वर देते हुए कहा है - ''राजा! तुम्हें इस जनम में पुत्र प्राप्ति नहीं होगी लेकिन तुम्हारी पुत्री के गर्भ से पैदा होनेवाला पुत्र तीनों लोकों में विख्यात होगा।'' इस प्रकार भगवान शिव के वर प्रभाव से मेरा जन्म हुआ। केसरी नामक कपींद्र से मेरी शादी हुई। कई साल बीतने पर भी मुझे संतान प्राप्ति नहीं हुई।

किष्किंधा नगर में मैंने कई प्रकार की पूजा-अर्चनाएँ की थी, मगर कोई उपयोग नहीं रहा इसलिए मैंने तप करना प्रारंभ की।'' तब मतंग महर्षि ने अंजना से इस प्रकार कहा- ''अंजना! तुम वृषभाचल पर रहे स्वामिपुष्करिणी में नहाकर, वराह स्वामी को प्रणाम करके, फिर वेंकटेश्वर का दर्शन करो। उसके पास ही वियद गंगा नामक तीर्थ है। वहाँ जाकर वायु भगवान के लिए तप करो। तुम्हें वायु के वर प्रभाव से जरूर पुत्र प्राप्ति होगी।''

महर्षि की बातें सुनकर अंजना खुशी से अपने पति को लेकर वेंकटाचलम जाती है। पहले कपिलतीर्थ में स्नान करके, वेंकटाद्री पहुँचती है। वहाँ स्वामिपुष्करिणी में नहाकर, वराह स्वामी का दर्शन करती है। फिर वेंकटेश्वर स्वामी को दर्शन करके वियद गंगा पहुँचती है। वहीं पर अंजना हजार साल तप करती है तो वायु भगवान प्रत्यक्ष होकर उसे वर देते हुए कहता है कि ''अंजना! तुम्हारा तप सफल हुआ है। अब तुम्हें पुत्र प्राप्ति होगी।''

तब से वह पहाड़ 'अंजनाद्री' नाम से विख्यात हुई है।

अंजना नंदनम वीरम जानकी शोक नाशनम।

कपीशम अक्ष हंताराम वन्दे लंका भयंकरम।।

इस प्रकार महावीर हनुमान को जनम देकर अप्सरा पुंजिकस्थला अंजना देवी के रूप में अपना जन्म सार्थक कर लिया है।

मातृ देवो भवा।

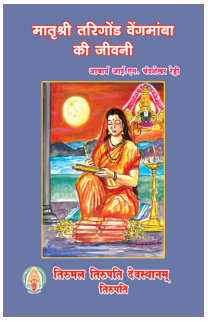

तिरुचानूर
श्री पद्मावती देवी जी का
ब्रह्मोत्सव के अवसर पर
ति.ति.दे. द्वारा
प्रकाशित ग्रंथ का विवरण

ग्रंथ का नाम - मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा की जीवनी
लेखक - प्रो.आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी
भाषा - हिन्दी
साइज - 1/8 डेम्मी
दाम - रु.70/-.

अन्य विवरण के लिए - ति.ति.दे. प्रकाशनों का बिक्री केंद्र, ति.ति.दे. प्रेस काम्पौंड, के.टी.रोड, तिरुपति - 517 501. दूरभाष-0877-2264209.

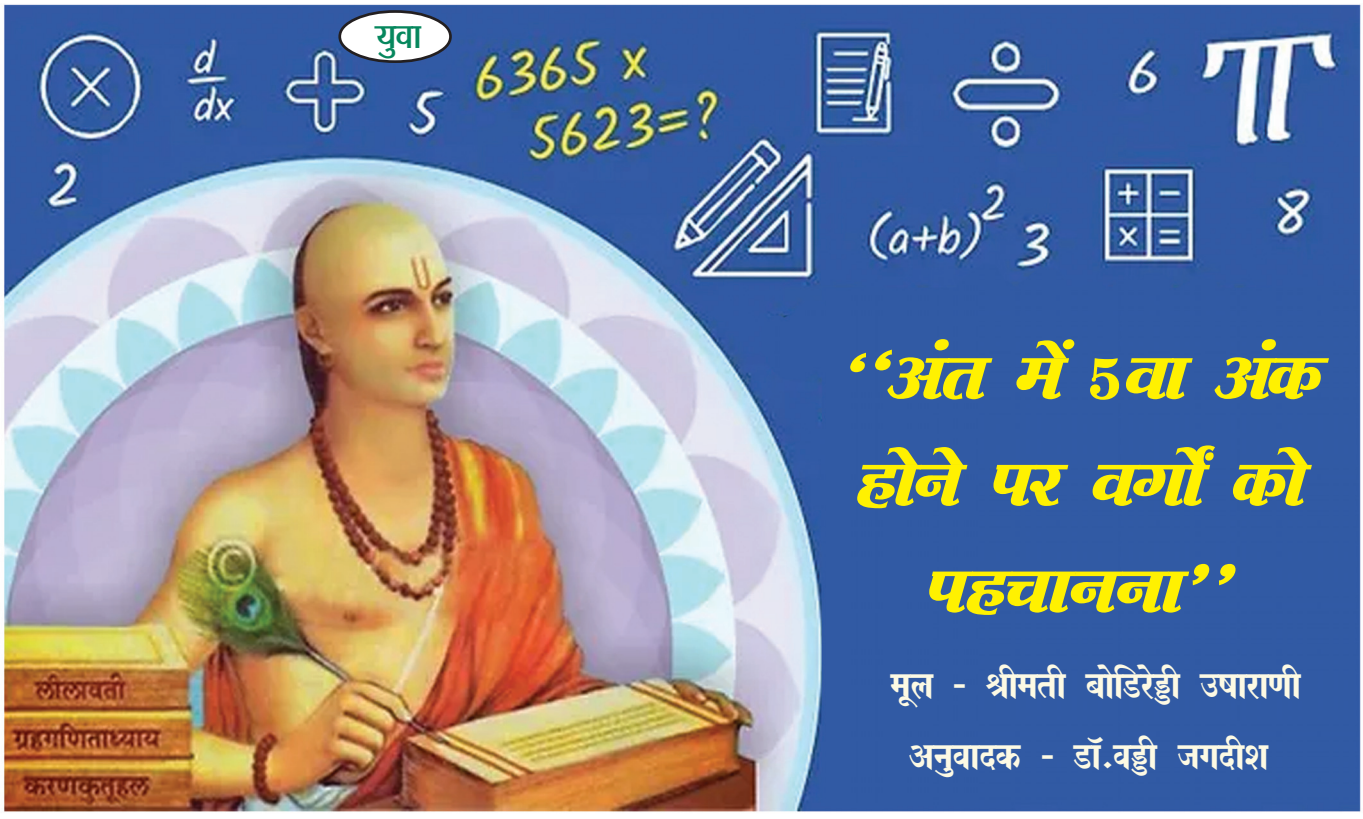

''अंत में 5वा अंक होने पर वर्गों को पहचानना''

मूल - श्रीमती बोडिरेड्डी उषाराणी
अनुवादक - डॉ.वड्डी जगदीश

विधि : जब संख्याओं का वर्ग पहचानते है तब प्रथम स्थान की संख्या अगर 5 होता है तब 5 का वर्ग प्रथम स्थान में ही लिखना। तुरंत दहाई स्थान के बाद के अंक में हजार और सैकड़े के स्थान पर लाभ को जोड़ना चाहिए।

उदा (1) : 15 का वर्ग (15^2) चाहिए तो...

5 का वर्ग 25 है। इस को दहाई, प्रथम स्थान पर लिखना चाहिए। और दशम स्थान की संख्या 1 के बाद रहने वाली संख्या 2 से गुणना करने पर लाभ 2 आता है। इसे सैकड़ स्थान पर लिखना चाहिए। तब संख्या का वर्ग 225 बनता है।

उदा (2) : 25 का वर्ग (25^2) चाहिए तो...

यहाँ 5 का वर्ग 25 है। इसे दशम स्थान और प्रथम स्थान पर लिखना चाहिए।

यहाँ दशम स्थान का अंक 2 है, इस की अगली संख्या 3 से गुणना करने पर लाभ 6 आता है। इसे सैकड़ों स्थान पर लिखना चाहिए। तब संख्या का वर्ग 625 बनता है।

ऐसे : $(35)^2 = 3X4, 5X5 = 1225$

$(65)^2 = 6X7, 5X5 = 4225.$

''अंत में $^1/_2$ रहने पर संख्याओं का वर्ग पहचानना''

उदा (1) : $5^1/_2$ का वर्ग $(5^1/_2)^2$ इस का फल चाहिए तो...

यहाँ 5 के बाद की संख्या 6 ....

इन का लब्ध 5X6=30

यहाँ $^1/_2$ का वर्ग $(^1/_2)^2 = ^1/_4$ होता है।

अब $(5(^1/_2))^2 = 30^1/_4$.

उदा (2) : $15^1/_2$ का वर्ग चाहिए तो...

यहाँ 15 की अगली संख्या 16 ....

इन का लब्ध 15X16=240

अगला $^1/_2$ का वर्ग $= ^1/_4$

अब $(15^1/_2)^2 = 240\,^1/_4$ बनता है।

दी गई विधि द्वारा जब अंत में $^1/_2$ देने से आसानी विधि द्वारा वर्ग को पहचान कर सकते है।

इस में और एक विधि को जानिए...

प्रथम संख्या जब सामान होने पर और अगली संख्या भिन्न होने पर उन का कुल '1' होने से उन का लब्ध पहचानना :

उदा (1) : $4^1/_3$ को $4^2/_3$ से गुणना करने पर उस का लब्ध पहचानना :

यहाँ : भिन्न अंकों का कुल $= ^1/_3 + ^2/_3 = 1$ होता है।

इसलिए 4 की अगली संख्या = 5

इन का लब्ध = 4X5=20 बनता है।

$^1/_3$, $^2/_3$ का लब्ध = $^2/_9$ 1 इसे 20 के अगले स्थान में लिखने पर उन का लब्ध = $20^2/_9$ बनता है।

उदा (2) : $10^3/_5$, $10^2/_3$ का लब्ध चाहिए तो....

यहाँ : भिन्न अंकों का कुल $= ^3/_5 + ^2/_5 = 1$

इसलिए 10 की अगली संख्या = 11

इन का लब्ध = 10X11=110 बनता है।

$^3/_5$, $^2/_5$ का लब्ध $^6/_{25}$ को 110 के बाद में लिखने पर $110\,^6/_{25}$ होता है।

'समान अंकों की संख्याओं के वर्ग'

यहाँ वर्गों को पहचानने के लिए कई आसानी पद्धतियाँ हैं। उदाहरण के लिए पहले पहल 11 अंक का वर्ग को पहचानेंगें।

इस का वर्ग 121 है। ऐसे ही 111 का वर्ग 12321 होता है।

यहाँ वर्ग को पहचान करने के बाद संख्या में जितने एक नंबर हैं उन संख्याओं बीच में लिखकर दोनों तरफ 1 आने तक कम करते हुए लिखन चाहिए। तभी उस का वर्ग मिलता है।

इस पद्धति से सभी स्थानों में 1 वाली संख्या के वर्गों को पहचान कर सकते हैं।

लेकिन यह विधि 9 स्थानों की संख्या तक सीमित हैं।

जैसे...

$$1\,1\,1\,1^2 = 1\,2\,3\,4\,3\,2\,1$$

$$1\,1\,1\,1\,1^2 = 1\,2\,3\,4\,5\,4\,3\,2\,1$$

$$1\,1\,1\,1\,1\,1^2 = 1\,2\,3\,4\,5\,6\,5\,4\,3\,2\,1$$

$$1\,1\,1\,1\,1\,1\,1^2 = 1\,2\,3\,4\,5\,6\,7\,6\,5\,4\,3\,2\,1$$

$$1\,1\,1\,1\,1\,1\,1\,1^2 = 1\,2\,3\,4\,5\,6\,7\,8\,7\,6\,5\,4\,3\,2\,1$$

$$1\,1\,1\,1\,1\,1\,1\,1\,1^2 = 1\,2\,3\,4\,5\,6\,7\,8\,9\,8\,7\,6\,5\,4\,3\,2\,1$$

इसी विधि को उपयोग कर सभी स्थानों में 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9 में अगर 1 रहने से वर्ग को पहचान कर सकते।

उदा : 222 का वर्ग चाहिए तो...

यहाँ $2^2X(11)^2$ होता है, इसलिए पहले 111 का वर्ग पहचान कर उस के बाद उस $2^2=4$ बढाने से हो जाता है।

इसलिए $222^2 = 4X111^2$

$= 4(12321)$

$= 49284$

ऐसे $333^2 = (111)^2 \text{ X } (3)^2$

$= 12321X9$

$= 110889.$

ऐसे ही $444^2 = (111)^2 \text{ X } (4)^2$

$= 12321X16$

$= 200136.$

इसी प्रकार दी गई विधियों से वर्गों को आसानी से छात्र पहचान कर सकते हैं।

(आयुर्वेद)

कीवी फल

- डॉ.सुमा जोषि

कीवी फल, जिसे चीनी करौन्दा भी कहा जाता है कि पौराणिक कथाओं और इतिहास दोनों में समृद्ध पृष्ठभूमि निहित है।

चीनी पौराणिक कथाओं में, कीवी फल सीधे तौर पर देवताओं से जुडा नहीं है, लेकिन कभी-कभी ''दीर्घायु'' की अवधारणा से जुडा होता है, क्योंकि चीनी संस्कृति में कई फल स्वास्थ्य और लम्बे जीवन का प्रतीक हैं। फल का चमकीला हरा रंग और इसके बीजों का तारों से मिलता जुलता होना जीवन शक्ति के प्रतीक के रूप में देखा जाता है। हालाँकि, कोई भी प्रमुख मिथक सीधे तौर पर कीवी पर केन्द्रित नहीं है।

कीवी फल चीन का मूल निवासी है, जहाँ मूल रूप से इसकी यांग्त्जी (Yangtze) नदी घाटी में की जाती थी। यूरोपीय करौंदे से समानता के कारण इसे चीनी करौंदा कहा जाता था। 20वीं सदी की शुरुआत में, यह फल न्यूजीलैंड में लाया गया, जहाँ कीवी पक्षी के नाम पर इसका नाम ''कीवी'' रखा गया, जो देश का राष्ट्रीय प्रतीक है। नाम परिवर्तन से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर फल का विपणन करने में मदद मिली। 20वीं सदी के मध्य तक, न्यूजीलैंड इस फल का प्रमुख उत्पादक बन गया और दुनिया भर में फैल गया, अपने अनूठे स्वाद और स्वास्थ्य लाभों के लिए लोकप्रिय हो गया। हालांकि मूल रूप से चीन से, इस फल की आधुनिक पहचान न्यूजीलैंड से दृढ़ता से जुडी हुई है, जिसने इसके वैश्विक प्रसार और मान्यता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

कीवी का वैज्ञानिक नाम है Actinidia deliciosa अथवा Actinidia chinensis. यह दोनों प्रभेद हैं। इसका कुल (Family) का नाम है Actinidiaceae. कीवी फल का पौधा तक लकड़ीदार, पर्णपाती बेल है जो अपनी जोरदार वृद्धि और चढ़ने की क्षमता के लिए जाना जाता है। यहाँ इसकी मुख्य रूपात्मक विशेषताओं का संक्षिप्त विवरण दिया गया है :-

जडें :- रेशेदार, जड प्रणाली, जो व्यापक चढ़ाईवाली लताओं को सहारा देती है और पानी और पोषक तत्वों को अवशोषित करती है।

तना :- चढ़ने की आदत के साथ वुडी और बालों वाला, 9 मीटर तक की लम्बाई तक पहुँचने में सक्षम है। लताएँ मुडती हैं और समर्थन संरचनाओं पर बढ़ती हैं।

पत्ते :- बडे, दिल के आकार के और दाँतेदार किनारों के साथ आम तौर पर गहरे हरे रंग के होते हैं। वे वैकल्पिक रस से व्यवस्थित होते हैं और उनकी सतह धुँधली होती है।

फूल :- मलाईदार सफेद से पीले और व्यास में लगभग 2-5 cm होती हैं। वे आम तौर पर एकलिंगी होते हैं, जिनमें नर और मादा फूल अलग-अलग पौधों पर होते हैं। केवल मादा पौधे ही फल देते हैं।

फल :- अण्डाकार, भूरा और महीन रोमेंदार बालों से ढ़का हुआ होता है। अन्दर का गुदा आम तौर पर हरा या सुनहरा होता है, जिस में छोटे, खाने योग्य काले बीज

होते हैं जो एक सफेद कोर के चारों ओर एक विकिरण पैटर्न में व्यवस्थित होते हैं।

कीवी फल अपने अनूठे तीखे-मीठे स्वाद और नरम, रसदार बनावट के लिए जाना जाता है।

रासायनिक संरचना

कीवी फल में समृद्ध और विविध रासायनिक संरचना होती है, जो इसे अत्यधिक पौष्टिक बनाती है। यहाँ एक संक्षिप्त अवलोकन दिया गया गया है :-

पानी :- 80-90% इसके रसदारपन से जलशोषण में लाभदायी है।

कार्बोहाइड्रेट :- लगभग 14-15%, मुख्यरूप से प्राकृतिक शर्करा और आहार फाइबर विशेष रस से घुलनशील फाइबर, जो पाचन में सहायता करता है।

विटामिन :- विटामिन-सी, विटामिन-के, विटामिन-ई और कुछ बी-विटामिन विशेष रूप से फोलेट में उच्च है।

खनिज :- इसमें पोटेशियम, कैल्शियम, मैग्नीशियम और थोडी मात्रा में आयरन और जिंक होता है जो शरीर के विभिन्न कार्यों का समर्थन करती है।

एंटीआक्सीडेंट :- पॉलीफेनोल्स, कैरोटीनायड और क्लोरोफिल से भरपूर, जो इसके एंटीऑक्सीडेंट गुणों में योगदान करते हैं।

एजांइम :- इसमें एक्टिनिडिन होना है, एक प्रोटीयोलाइटिक एजांइम जो प्रोटिन पाचन में सहायता करता है।

फाइटोफेमिकल्स :- इसमें एंटी-इंफ्लेमेटरी और एंटी आक्सीडेंट प्रभाववाले फ्लेवोनोइड्स और बायोएक्टिव यौगिक शामिल हैं।

पोषण के लाभ / आरोग्य के लाभ

पोषणयुक्त

विटामिन-सी से भरपूर होने के कारण प्रतिरक्षा को बढ़ाता है और ऑक्सीडेटिव तनाव से लडता है।

फाइबर में उच्च :- पाचन स्वास्थ्य का समर्थन करता है और कब्ज को रोकता है।

कैलोरी में कम :- वजन प्रबंधन के लिए सहायक है। एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर होने के कारण मुक्त कणों से होनेवाले नुकसान से निपटने में मदद करता है। विटामिन-ई से युक्त है। स्वस्थ त्वचा और बालों को बढ़ावा देता है।

पाचन स्वास्थ्य

1) उच्च फाइबर सामग्री आन्त्र नियमितता को बढ़ावा देती है और कब्ज को रोकने में सहायक है।

2) आंत स्वास्थ्य का समर्थन करता है। लाभकारी आंत बैक्टीरिया को खिलाने के लिए प्रोबायोटिक के रूप में कार्य करता है।

हृदय स्वास्थ्य

1) कोलेस्ट्रॉल कम करता है।

2) उच्च पोटेशियम का स्तर रक्तचाप को नियन्त्रित करता है। रक्त का थक्का जमना कम करता है। इसमें प्राकृतिक रक्षणात्मक गुण होते हैं।

प्रतिरक्षा

1) विटामिन-सी और एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर होने के कारण प्रतिरक्षा प्रणाली को बढ़ावा देता है।

2) घाव भरने में तेजी लाता है। विटामिन-के रक्त के थक्के जमने और ऊतकों की मरम्मत में सहायता करता है।

3) एंटीऑक्सिडेंट और फ्लेवोनोइड सूजन को कम करते हैं।

त्वचा और बालों के लिए

1) विटामिन-सी कोलेजन उत्पादन को बढ़ावा देता है और त्वचा चमकदार होता है।

2) जीवाणुरोधी गुण त्वचा पर होनेवाले मुहांसों से लडते हैं।

3) त्वचा को हाइड्रेट करता है।

4) बालों को मजबूत बनाता है।

दृष्टि और नेत्र स्वास्थ्य

1) धब्बेदार अधः पतन को रोकता है।

2) ल्यूटिन और जेक्सैन्थिन उम्र से सम्बन्धित दृष्टि हानि से बचाता हैं।

3) विटामिन-ए और एंटीऑक्सीडेंट समग्र नेत्र स्वास्थ्य को लाभ पहुँचाते हैं। रात्रि दृष्टि में सुधार होता है।

हड्डी और जोडों का स्वास्थ्य

1) कैल्शियम, मैग्नीशियम और विटामिन-के का उच्च स्तर हड्डियों के घनत्व में सुधार करता है।

2) जोडों के दर्द को कम करता है। सूजनरोधी गुण गठिया में मदद कर सकते हैं।

ऊर्जा और मानसिक स्वास्थ्य

1) इसमें प्राकृतिक शर्करा और आवश्यक पोषक तत्व होते हैं जो ऊर्जा के स्तर को बढ़ाता है।

2) उच्च सेरोटोनिन सामग्री विश्राम और नीन्द को बढ़ावा देती है। तनाव कम करता है।

3) फोलेट से भरपूर है जो मानसिक स्वास्थ्य का समर्थन करता है।

रोग निवारण

1) कैंसर से बचाता है।

2) श्वसन स्वास्थ्य का समर्थन करता है।

3) रक्त शर्करा के स्तर में सुधार लाता है। मधुमेह प्रबन्धन का समर्थन करता है।

सावधनियता

1) कुछ लोगों को कीवी से एलर्जी होता है। जिससे मुहं, होठ या गले में खुजली, सूजन या झुनझुनी जैसी लक्षणों के साथ Oral allergy syndrome हो जाता है।

2) गम्भीर एलर्जी प्रतिक्रियाओं में सांस लेने में कठिनाई हो सकती है।

3) इसमें ऑक्सलेट की मात्रा अधिक होती है। गुर्दे की बीमारीवाले लोगों को इसके सेवन की निगरानी करनी चाहिए।

4) लेटेक्स एलर्जीवाले लोग अक्सर कीवी का सेवन करते समय क्रॉस-रियक्टिव लक्षणों का अनुभव करते हैं।

5) जबकी कीवी में ग्लाइसेमिक इण्डेक्स कम होता है, फिर भी इसका अत्यधिक सेवन रक्त शर्करा के स्तर को प्रभावित कर सकता है।

6) बहुत अधिक कीवी खाने से हाइपरकेलेमिया हो सकता है, जिससे किडनी की समस्यावाले व्यक्तियों में मांसपेशियों में कमजोरी या अनियमित दिल की धडकन जैसे लक्षण पैदा हो सकते हैं।

सहनशीलता और स्वास्थ्य स्थिति के आधार पर प्रतिदिन 1-3 कीवी का सेवन सीमित करें। एलर्जी का सन्देह है तो, पहले स्वास्थ्य सेवा प्रदाता से परामर्श लें। स्वस्थ रहें, सुरक्षित रहें।

आइये, संस्कृत सीखेंगे..!!!

लेखक - महामहोपाध्याय काशिकृष्णाचार्य
आयोजक - आचार्य के.रामसूर्यनारायण

अनुवाद - श्री अवधेष कुमार शर्मा

षट्त्रिंशः पाठः - छत्तीसवॉ पाठ

(धा) (व-प्र.ए) (अर्थ)
पठ् - पठति = पड़ता है।
लिख् - लिखति = लिखता हैं।
मार् - मारयति = मारता है।
तोष् - तोषयति = सन्तुष्ट करता है।
रक्ष् - रक्षति = रक्षा करता है।
त्रास् - त्रासयति = डरता है।
पोषृ - पोषयति = पालता है।
हास् - हासयति = हसाता है।
शिक्ष - शिक्षयति = शिक्षा देता है।
धाव् - धावति = दौड़ाता है।
क्षाळ् - क्षाळयति = धुलता है।
ताड् - ताडयति = पीटता है।
नाद् - नादयति = बजाता है।
तोल् - तोलयति = मापता है।
पश्च - वञ्चयते = वचाता है।
पात् - पातयति = गिराता है।
धार् - धारयति = धारण करता है।
चोर् - चोरयति = चुराता है।

(धा) (व-प्र.ए) (अर्थ)
भूष् -भूषयति = सुशोभित करता है।
मुण्ड् - मुण्डयति = शिरोमुंडन करता है।
द्राव् - द्रावयति = द्रवित करता है।
पाय् - पाययति = पिलाता है।
शाय् - शाययति = सुलाता है।
पाच् - पाचयति = पकवाता है।
पाठ् - पाठयति = पढ़ाता है।
लेख् - लेखयति = लिखवाता है।
शोष् - शोषयति = शोषण करता है।
दूष् - दूषयति = दूषित करता है।
पूर् - पूरयति = पूरा करता है।
पीड् - पीडयति = पीडा देता है।
दण्ड् - दण्डयति = दण्ड देता है।
मण्ड् - मण्डयति = सजा करता है।
गम् - गमयति = भेजता है।
चोद् -चोदयति = प्रेरित करता है।
पाल् - पालयति = पालता है।
चार् - चारयति = चराता है।

जनवरी महीने का राशिफल

- डॉ.केशव मिश्र

मेष राशि - यह माह आपके लिए उत्तम फलदायक रहेगा। प्रभाव-प्रताप की वृद्धि, संतान सुख, नौकरी-व्यवसाय के कार्यों में वृद्धि। अपनों का एवं मित्रों का सहयोग मिलेगा। रचनात्मक कार्यों में रुचि। पद प्रतिष्ठा-सम्मान में वृद्धि। पारिवारिक सुख और दाम्पत्य सुख प्राप्त होंगे।

वृषभ राशि - मन व्याकुल रहेगा। शारीरिक बाधा, वाहन सावधान होकर चलाए दुर्घटना होने की सम्भावना है। अपने वाणी व्यवहार पर नियन्त्रण रखे उच्चाधिकारियों से वैमनसता हो सकती है। पुराने रुके हुए कार्यों में प्रगती, नौकरी पेशों में उल्लास पूर्ण रहेगा। दाम्पत्य जीवन सुखमय, उद्योग-धन्धों में पूर्ण सफलता, धन प्राप्ति योग।

मिथुन राशि - अपने को धैर्य बनाकर रखे नहीं तो लोगों से अनावश्यक मनमुटाव रहेगा जिससे मन खिन्न रहेगा, चोट-दुर्घटना होने की संभावनाए बन रही है ध्यान पूर्वक वाहन का प्रयोग करें। आय कम खर्च अधिक होगा। जिससे आर्थिक सन्तुलन बिगर सकता है।

कर्कटक राशि - शारीरिक कष्ट होगा जैसे रक्तविकार-जननेन्द्रियों में पीड़ा, मानसिक तनाव जिससे मन खिन्न रहेगा। दूसरों के बहकावे में न रहे वरना वाद-विवाद, अपयश, चित्त भ्रमित रहेगा। अपनों और कौटुम्बिक चिन्ता, आय कि चिन्ता, आर्थिक सन्तुलन बना कर रखे। छात्रों के लिए विद्या लाभ, सुख शान्ति एवं सफलता के लिए परिश्रम आवश्यक है।

सिंह राशि - दिनचर्या को नियमित रूप से करे जिससे शारीरिक सुख-शांति प्राप्त होंगे। अपने व्यवहारों को कुशल बनाकर रखे जिससे अनेकानेक उपलब्धि प्राप्त होंगे। रोजी-रोजगार मजबूत होंगे। धन प्राप्ति योग। धार्मिक सामाजिक संलग्नता रहोगी।

कन्या राशि - यह माह आपके लिए उत्तम फलदायक सिद्ध होगा। शरीर स्वस्थ्य, शारीरिक सुख, गृह में सुख-शांति, आनन्द-वस्त्रादि लाभ, मन प्रसन्न रहेगा। समसामयिक प्रयासों में सफलता, विद्या-बुद्धि का विकास, रोजी-रोजगार में पूर्ण सफलता। विशिष्ट जनों से सम्पर्क लाभप्रद होगा।

तुला राशि - शारीरिक-मानसिक स्वस्थता, अपने कुटुम्ब इष्टमित्रों का भरपूर सहयोग जिससे उल्लास पूर्ण वातावरण बना रहेगा। पारिवारिक सुख, दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा। कठोर वचन के कारण वाद-विवाद, मन खिन्न रहेगा। शुभ कार्यों में धन व्यय होगा।

वृश्चिक राशि - शारीरिक सुख, उत्तम स्वास्थ्य, वाणी व्यवहार में उग्रता। आप अपने वाणी व्यवहार परिश्रम के द्वारा किसी भी कार्यों को सफलता पूर्वक पूर्ण कर सकते हैं वाक्चातुर्य से। आर्थिक संतुलन, कृषि-भूमि-वाणिज्य विस्तार, कौटुम्बिक सुख, अपनो का सहयोग जिससे मन प्रसन्न रहेगा।

धनुष राशि - मानसिक-शारीरिक दुर्बलता का निवारण, मनोबल में वृद्धि होने के कारण बौद्धिक विकास। राजकीय कार्यों में सहयोग, अभीष्ट कार्य की सिद्धि, पारिवारिक कष्ट होने के कारण उलझनें बढ़ेगी। छात्रों के लिए प्रतियोगि परिक्षा में सफलता एवं उत्तरोत्तर वृद्धि। अपनों का इष्टमित्रों का सहयोग।

मकर राशि - आप अपने दिनचर्या को नियमित रूप से रखे वरना स्वास्थ्य बाधा हो सकती है। नौकरी करने वाले लोगों की स्थिति सामान्य रहेगी। व्यावहारिक जीवन सुखमय रहेगा, काम-कार्यों में सकारात्मक प्रगति। वाहन सुख, धनागम प्राप्ति योग, कौटुम्बिक सुख, नये विशिष्टजनों का सम्पर्क लाभप्रद होगा।

कुंभ राशि - आरोग्य सुख, अन्न-धन-वस्त्रादि की प्राप्ति होंगे। आय का स्त्रोत बढ़ेगा जिससे धन लाभ होंगे। परिश्रम से व्यापारिक कार्यों में पूर्ण सफलता, व्यक्तित्व विकास, पदोन्नति, वाद-विवाद होने कि सम्भावना रहेगी। संतान सुख, पारिवारिक सुख, अभिष्ट कार्य सिद्ध।

मीन राशि - पूराने रूके कार्यों का निवारण, कार्यक्षेत्रों का विस्तार, आरोग्य सुख, नौकरी-व्यापार की स्थिति मजबूत बनेगी। अपनों का सहयोग, पारिवारिक सुख, संतान सुख, आर्थिक संतुलन होने के बावजूद धन व्यय। रचनात्मक कार्यों में रुचि, सुखप्रद यात्रा, धार्मिक सामाजिक कार्यों में संलग्नता। तिर्थाटन योग बन रहा है।

(नीतिकथा)

विवेक का बल

- श्री के.रामनाथन

राजा वीरसेन शैलेन्द्रपुर का शासक था। राजा बड़ा न्याय प्रिय और ईमानदार था। इसलिए उसके राज्य की प्रजा निर्भय और निश्चिंत का जीवन बिता रहे थे। राजा समय समय पर छद्मा वेश में जाकर लोगों की सच्ची दशा का पता लगा लेता था। इससे उसके राज्य में प्रजा को सुख की कोई कमि नहीं थी। एक बार वह एक साधु के वेश में नगर में जा रहा था। तब उसने देखा कि एक किसान अपने खेत में कठोर धूप को भी परवाह किये बिना परिश्रम कर रहा है। छद्म वेश में रहा वह राजा उसके निकट गया और उसने किसान को आशीर्वाद देते हुए कहा, ''भगवान तुम्हे लम्बी आयु और समृद्ध जीवन दिलावें।'' किसान को पता नहीं था कि आया वह साधु राजा है। उसने साधु के आशीर्वाद के लिए धन्यवाद देते हुए कहा,''आपकी दया और करुणा के लिए बहुत धन्यवाद।'' तब राजा ने उससे सवाल किया, ''इस खेती के काम में तुमको क्या आमदनी मिलती है?'' उसका जवाब देते हुए किसान ने कहा, ''साधुवर् मुझे इस खेत में हर महीना सौ सिक्कियाँ मिलती हैं। ''यह सुनकर राजा ने पूछा, ''उतनी बड़ी कमाई को तुम क्या करते हो?'' यह सुनकर किसान ने कहा, ''मुनिवर् मैं अपनी कमाई को पाँच भागों में बाँट लेता हूँ। उसमें प्रथम भाग के धन देश के राजा को कर के रूप में दे देता हूँ। दूसरे भाग के धन से अपना कर्ज चुकाता हूँ। तीसरे भाग के धन को कर्ज में देता हूँ। चौथे भाग के धन फेंक देता हूँ। आखिर पाँचवें भाग के धन को अपने खर्च के लिए रख लेता हूँ।''

किसान के जवाब से राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ। क्योंकि किसान का जवाब पहेली के बराबर रहा। इसलिए वह उसके जवाब को साफ समझ नहीं पाया। उसने जब अपना छद्मवेश निकला तब किसान ने समझ लिया कि अपने सामने देश के राजा खड़े हैं। वह उनका उचित आदर सत्कार किया। तव राजा ने उससे अपना संदेह पूछा, ''हे किसान, तुम्हारा जवाब मुझे पहेली सम लगता है। मुझे सिर्फ यही समझ में आती है कि तुम्हारी कमाई के एक भाग देश को कर के रूप में दे देते हो और एक भाग से अपना खर्च कर लेते हो। बाकी तीनों प्रकार के खर्च मुझे अजीब लगते हैं। इसलिए तुम मुझे उसके बारे में स्पष्ट समझाओ।''

राजा की बात सुनकर किसान ने कहा, ''राजन् मैं अपनी कमाई में एक भाग को अपने माता-पिता के लिए खर्च करता हूँ, जिन्होंने मुझे जन्म दिया और पाल-पोसकर बड़ा किया। वह तो मुझे अपने जीवन में प्राप्त कर्ज है न? मैं उनके लिए जो खर्च करता हूँ वह तो कर्ज चुकाने का ही है न? दूसरे भाग के धन को मैं अपने पुत्र के लिए खर्च करता हूँ, जो बड़े होकर मेरी रक्षा करने वाला है। भविष्य में मेरी रक्षा करने वाले मेरे पुत्र के लिए किया जाने वाला खर्च तो दिया जाने वाला कर्ज बराबर है न? तीसरे भाग के धन को मैं अपनी बेटी के लिए खर्च करता हूँ। शादी के बाद वह तो दूसरे के यहाँ चली जाएगी और उसके लिए किये जाने वाले खर्च से मुझे कोई लाभ तो नहीं मिलेगा। इसलिए ऐसा खर्च तो फेंके जाने वाले धन के बराबर है न।''

किसान का जवाब सुनकर राजा प्रसन्न हुआ। उसने किसान को देखकर कहा, ''हे किसान, तुम बड़ा विवेकी हो। तुम्हारा जवाब प्रशंसनीय है। मुझसे बताये गये इस जवाब को तुम कभी भी किसी से मत कहना। तुम हमेशा इस जवाब को मेरे रूप के समक्ष ही कहना चाहिए। यदि तुम किसी से कहोगे तो तुम मारे जाओगे।'' राजा की आज्ञा

सुनकर किसान ने भी वादा कर दिया, ''राजन्, मैं किसी भी दशा में बिना आपके रूप के समक्ष, किसी को नहीं बताऊँगा।'' उसके बाद राजा अपने यहाँ लौट गया।

अगले दिन राजा अपने दरबार में मंत्रियों के सामने किसान से बतायी गयी पहेली के बारे में बताकर उसका जबाव बताने के लिए कहा। उसने यह भी कहा कि जो उचित जवाब देता है उसे पाँच सौ स्वर्ण मुद्रायें भेंट में दी जाएगी। अगर यदि कोई गलत जवाब देगा उसे मृत्यु दंड़ दिया जाएगा। दरबार में उपस्थित बुद्धिमान मंत्री अनेक तो थे, पर कोई भी उसका जवाब नहीं दे सके। उन सब को इस बात का डर बना हुआ था कि यदि जवाब गलत हो तो मृत्यु दंड़ भोगना पड़ेगा। तब एक मंत्री ने राजा से पूछा, ''महराज् यदि आप मुझे दो दिन का समय देंगे तो मैं उसका जवाब दे सकता हूँ।'' राजा ने उसका निवेदन स्वीकार कर लिया। इतने में उस मंत्री को किसान के साथ राजा की बातचीत के बारे में मालूम हो गयी। उसने प्राप्त उन दो दिनों का फायदा उठाना चाहा। उस दिन शामको वह उस किसान से मिलकर सौ स्वर्ण मुद्राओं को उसके हाथ में देकर राजा से पूछे गये सवाल का जवाब बताने को कहा। किसान पहले जवाब देने के लिए हिचकता था। पर मंत्री ने कहा, ''यदि तुम सच सच बताओगे तो मैं तुमको और सौ सिक्कियाँ मुफ्त में दूँगा।'' यह सुनकर किसान एकदम खुश हो उठा। उसने राजा से जो बताया उसे मंत्री को सुना दिया। मंत्री ने भी अपने कहे अनुसार उसे और सौ सिक्कियाँ देकर वहाँ से विदा हुआ।

अगले दिन वह मंत्रि दरबार में राजा से मिला। उसने राजा से उनके सवालों को सही उत्तर बता दिया। उसके जवाब से राजा को पता चल गया कि किसान ने मंत्री को सारी बातें बता दी है। इसलिए उसने किसान को पकड लाने के लिए अपने सैनिकों को आज्ञा दी। सैनिकों ने किमान को राजा के सामने प्रस्तुत किया। राजा ने बड़े क्रोध में उससे पूछा, ''मेरी आज्ञा को सुनकर भी तुमने मंत्री से क्यों सच बताया। अब देखेंगे कि तुमको मृत्युदंड़ से कौन बचायेगा?''

यह सुनकर किसान ने कहा, ''राजन्, मुझे अपने कार्य में कोई अपराध तो महसूस नहीं होता। मैंने आपको जो वादा दिया उसी का पालन किया है। मंत्री से दी गयी सिक्कियाँ में एक ओर आपके रूप के चित्र अंकित थे। मैंने तो ऐसा वादा दे रखा था कि सिवा अपके रूप के समक्ष, किसी को नहीं बताऊँगा। मेरे इस कथन को मैंने सही पालन किया है। इसलिए इसमें मेरा तो कोई अपराध नहीं है।''

किसान का विवेकपूर्ण जवाब सुनकर राजा का क्रोध उड़ गया। उसने उसे मुक्त करते हुए कहा, ''तुम्हारी बुद्धि कुशलता ने तुम्हारे प्राण को बचा दिया है।''

हाँ, यह तो सच है कि विवेकशील व्यक्ति अपने बुद्धिबल के सहारे जीवन में उन्नत होता है।

नवंबर-2024 महीने का क्विज-28 के समाधान

1) श्री पद्मावती देवी, 2) द्रौपदी,

3) ऊर्वशी, 4) तिरुप्पावडा सेवा,

5) 12, 6) गजलक्ष्मी, 7) सुप्रभात सेवा,

8) श्री स्वामिपुष्करिणी, 9) आंजनेय/हनुमान,

10) पद्मसरोवर, 11) शमीवृक्ष, 12) अन्नमय्या,

13) कन्हैया और गोपाल,

14) उग्रश्रीनिवासमूर्ति/स्नपनबेरम्,

15) अष्टलक्ष्मी स्वरूप.

चित्रकथा

दक्षिण का मुख्य पर्व-संक्रांति

तेलुगु मूल - श्री के.वेंकट अप्पलाचार्युलु
अनुवादक - डॉ.एम.रजनी
चित्रकार - श्री के.वी.कोटिलिंगाचारि

यह संक्रांति पर्व ग्रामीण प्रांत वासियों से जोडी हुई एक महापर्व है। क्यों कि नई दमाद को सादर स्वागत सत्कार, बल-बच्चों और रिश्ते दारों से मिलाजुला कर करने वाली पर्व है। 1

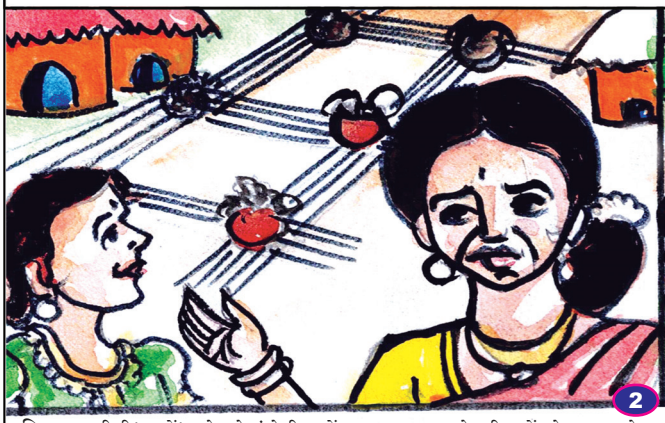

नातिन : नानीजी! क्यों! बडे-बडे रंगोली क्यों डाला गया। उसके बीच में गोबर का गोला क्यों रखा गया।

नानी : प्यारी बच्ची! वह गोबर का गोला नहीं। समस्त देवतागण विराजमान हुए गाय का गोबर है। उसे 'गोब्बि देवता' कहा जाता है।

नातिन : इतने बडे-बडे रंगोली क्यों डाला गया।

नानी : धनुर्मास के आरंभ से ही घर के सामने रंगोली डालते हैं। तभी लक्ष्मीदेवी घर आएगी।

नातिन : इस बाजार में सब लोग द्वार को फूलों से क्यों सजाए?

नानी : मेरी प्यारी बच्ची वे फूल गेंदा फूल है। संक्रांति के समय में द्वार को तोरण की तरह बाँधते हैं।

नातिन : हमारे शहर में ये सब क्यों नहीं है?

नानी : ये सब गाँव की सुंदरता को बढाते हैं। इसीलिए गाँव हमारे देश की रीढ की हड्डी है।

नातिन : ओहो!

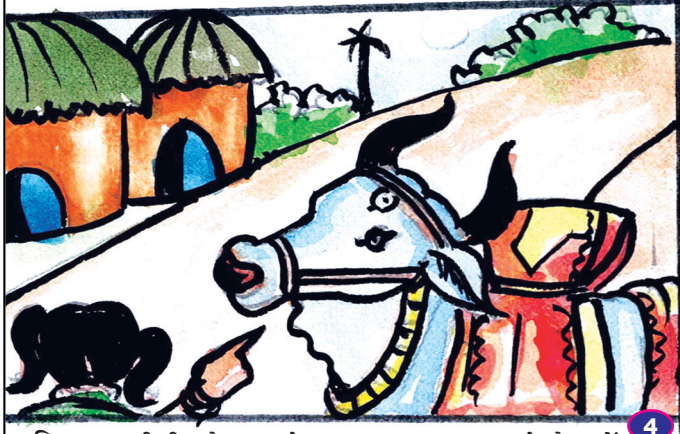

नातिन : नानीजी! बैल कपडे पहन कर नाच कर रहे है क्यों?

नानी : गुडिया : वह गंगिरेद्दु है।

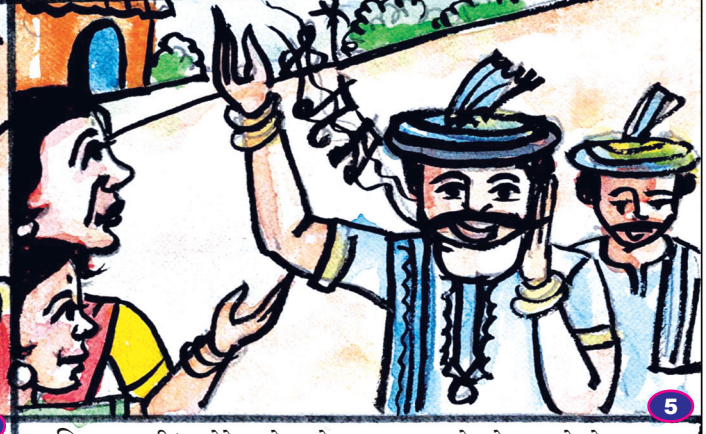

नातिन : नानी! सबेरे गाने गाते हुए बहुत सारे लोग आये थे। अब बहुत सारे ''गंगिरेद्दुवाले'' आये हैं।

नानी : हाँ! लाडली बेटी! संक्रांति तीन दिनों का त्योहार है। सब तरह के फसल उग कर किसानों का घर आएगा। गंगिरेद्दुवाले हरिदास, डफलची, जंगमदेवरों आदि लोग संक्रांति के दिन ही आते हैं। किसान खुशी से इन सब को धान्य देते हैं।

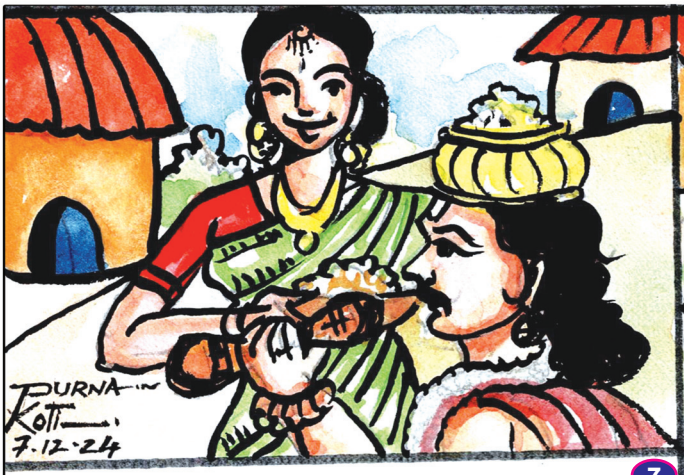

7

महिलाएँ घर में हुए आटा, चावल, धान्य, वस्त्र आदि को दान करते है।

8

नातिन : नानीजी! भोर क्यों आग डाल रहे हैं?

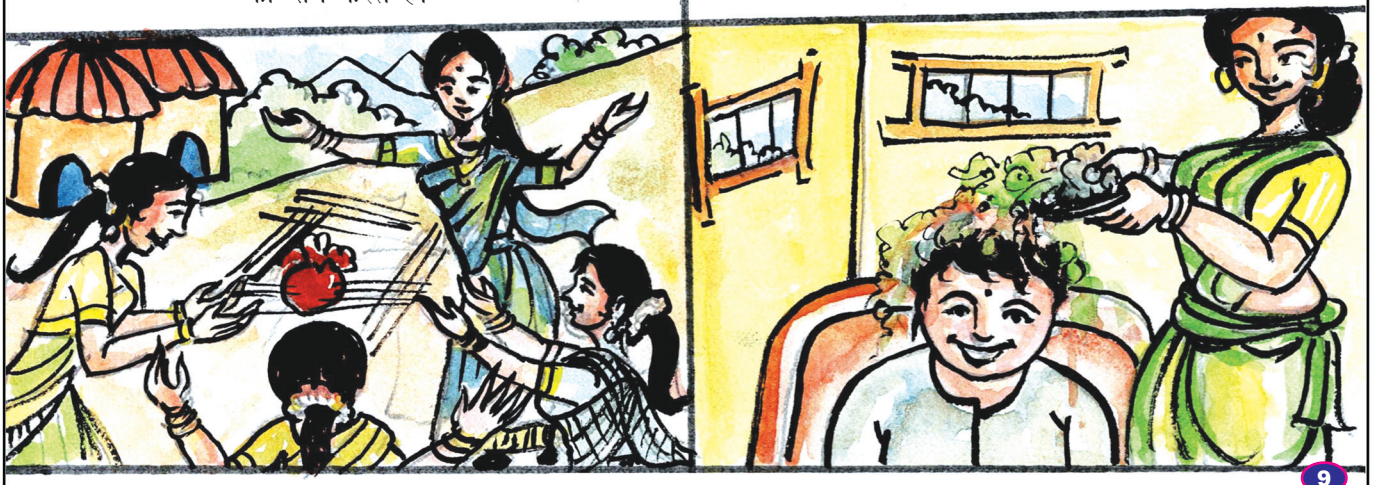

9

नानी : वही भोगी है! इस भोगी के दिन ही डालते हैं। इस दिन सिर-स्नान करके नये कपडे पहन कर, शाम को गोब्बम्मा को रखना है। कन्या लडकियाँ गोब्बम्मा के आस पास घूमते हुए, गाना गाते हुए, नृत्य करते हैं। बाद में सब बच्चों को भोगी के फल डालते हैं।

नातिन : नानी : पौधा के पास क्या पकाती है।

नानी : आज भोगी है न! एक महीने से सूखा उपला को चुल्हा जैसा बनाकर, पोंगल बनाकर, सूर्य भगवान को निवेदन करते हैं।

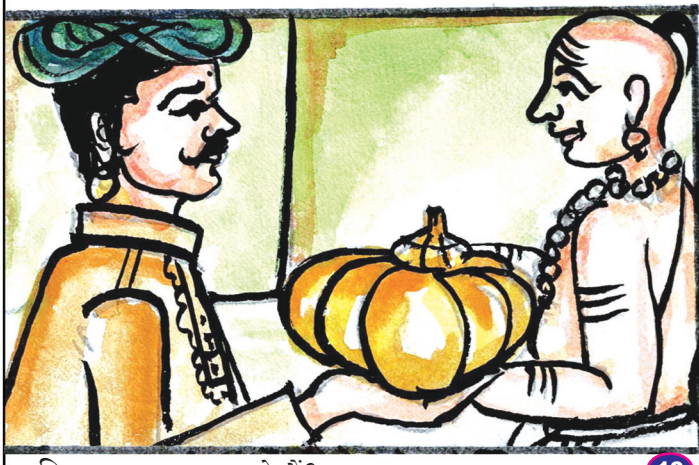

10

नातिन : आज क्या करते हैं?

नानी : घर के सभी सदस्य को कपडे देते हैं। ब्राह्मणों को बुलाकर कुम्हाडा दान करेंगे।

11

नातिन : नानी! नाना गायों को क्यों धो रहे हैं?

नानी : आज ''कनुमा'' है। जिसे पशुवुलपंडुगा माने गाय-बछडा का आराधन आज करते हैं। पशुवों की पूजा की जाती है।

नातिन : बहुत खुशी की बात है। नानी जी!

स्वस्ति।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान,
तिरुपति।

प्रश्नोत्तरी (क्विज) की नियमावली

1) प्रश्नोत्तरी की प्रतियोगिता केवल 15 वर्षों के अंदर बच्चों के लिए है।

2) भाग लेने वाले बच्चे हिंदु धर्म के होना अनिवार्य है।

3) इस प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले बच्चों के अभिभावक अनिवार्य रूप से ति.ति.दे. के द्वारा प्रकाशित होने वाली 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक मासिक पत्रिका का चंदादार होना आवश्यक है। प्रश्नोत्तरी के जवाबों के साथ अनिवार्य रूप से चंदादार की अपनी चंदा संख्या, नाम, पता, पिन-कोड के साथ फोन नंबर भी स्पष्ट रूप से लिख कर हमारे कार्यालय को भेजना चाहिए।

4) प्रश्नोत्तरी के जवाब, प्रश्नों के नीचे सूचित खाली जगहों पर लिख कर भेजना चाहिए।

5) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र ओरिजनल या जिराक्स प्रति मान्य है।

6) जवाबों में कोई काट-छांट या सुधार नहीं होना चाहिए।

7) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र **इस महीने का 25वाँ तारीख** के अंदर पहुँचाने की अंतिम तिथि है।

8) इस प्रश्नोत्तरी या क्विज में सही जवाब लिखने वाले बच्चों में से तीन बच्चों को मात्र ही 'लक्कीडिप पद्धति' में चुन कर विजेताओं की घोषणा की जाती है।

9) घोषित विजेताओं के नाम आगामी मास की 'सप्तगिरि' पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं।

10) ति.ति.दे. के प्रधान संपादक कार्यालय में कार्यरत कर्मचारियों के बच्चे इस प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के लिए अयोग्य हैं।

11) प्रश्नोत्तरी से संबंधित कोई भी समाचार फोन से नहीं दिया जाएगा। कृपया फोन से संपर्क न करें। ति.ति.दे. का निर्णय ही अंतिम है।

12) क्विज का समाधान भी इसी पुस्तक में है।

प्रश्नोत्तरी-जवाब कृपया इस पते पर भेजे :-

प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
दूसरा मंजिल, ति.ति.दे. प्रेस, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507, तिरुपति जिला, आंध्र प्रदेश।

बच्चे का नाम.....

लिंग/आयु....., चंदा नंबर.....

पता.....

.....

मोबाइल नं.....

क्विज-30

1) सूर्य मकरराशि प्रवेश से कौन-सा पर्व आता है?
ज).....

2) संक्रांति के अवसर पर गाय-बछडा को पूजा करनेवाला त्योहार क्या है?
ज).....

3) पुरंदर सोमयाजी का पुत्र का नाम क्या है?
ज).....

4) राजा वीरसेन किस प्रांत को शासन करते है?
ज).....

5) वैकुंठ एकादशी का और एक नाम क्या है?
ज).....

6) तिरुमल में विराजित भगवान जी कौन है?
ज).....

7) हनुमान के माताजी का नाम क्या है?
ज).....

8) रामायण-किष्किंधाकांडा के अनुसार शापग्रस्त अप्सरा का नाम क्या है?
ज).....

9) अंजना देवी का पति का नाम क्या है?
ज).....

10) इंद्र के आयुध का नाम क्या है?
ज).....

11) किस ऋषि के त्याग फल से इंद्र को आयुध प्राप्त हुआ था?
ज).....

12) तिरुनैमिशारण्यम-नैमिशार क्षेत्र के विमान गोपुर का नाम क्या है?
ज).....

13) तिरुक्कण्डम कडिनगर क्षेत्र का तीर्थों का नाम क्या है?
ज).....

14) अंजना देवी को संतान के लिए तपः करने का सूचना दी गयी ऋषि का नाम क्या है?
ज).....

15) तिरुमल में विराजित पुष्करिणी का नाम क्या है?
ज).....

बिंदी को जोड़िए

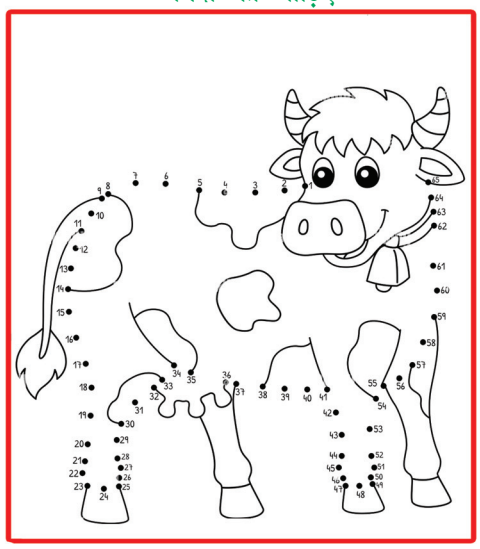

रंगों को भरिये क्या!

निम्न लिखित को मिलाएँ!

1) ऋषि	अ) मंदिर
2) फूल-पुष्प	आ) अध्यापक
3) पाठशाला	इ) बगीचा
4) जंगल	ई) आश्रम
5) घंटाध्वनि	उ) जानवर

उत्तर 1) ई 2) इ 3) आ 4) उ 5) अ

श्री वेंकटेश्वर मंगलाशासनम्

नित्याय निरवद्याय
सत्यानंद चिदात्मने।
सर्वांतरात्मने
श्रीमद्वेंकटेशाय मंगलम्।।

चित्रों को जोडिएँ

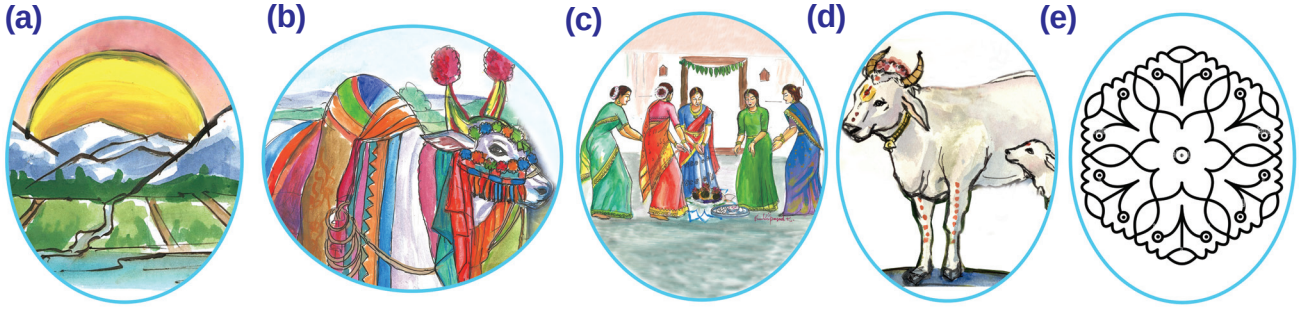

उत्तर : a) 5, b) 4, c) 3, d) 2, e) 1.

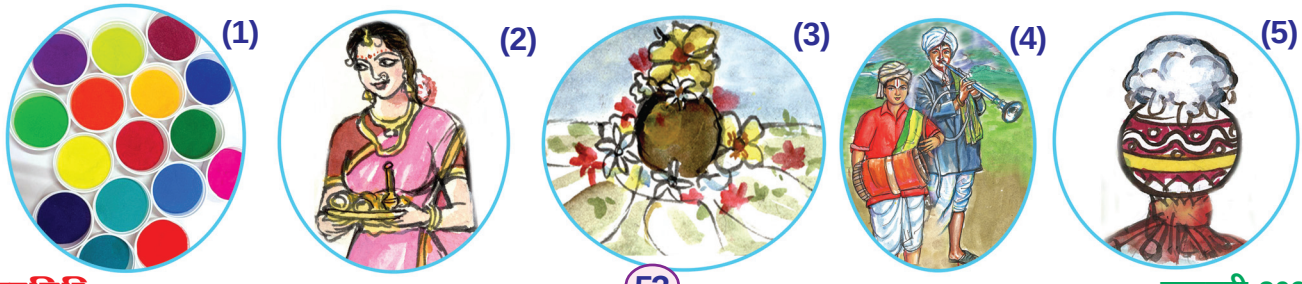

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

सप्तगिरि

(आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका)

चंदा भरने का पत्र

1. नाम : .....
   (अलग-अलग अक्षरों में स्पष्ट लिखें) .....
   .....
   पिनकोड .....
   मोबाइल नं .....

2. वांछित भाषा : ☐ हिन्दी ☐ तमिल ☐ कन्नड
   ☐ तेलुगु ☐ अंग्रेजी ☐ संस्कृत

3. वार्षिक चंदा ☐ रु.240/-; जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) ☐ रु.2,400/-;
   विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा ☐ रु.1,030/-

4. चंदा का पुनरुद्धरण :
   (अ) चंदा की संख्या :
   (आ) भाषा :

5. शुल्क का विवरण :
   मांगड्राफ्ट संख्या (D.D.) / भारतीय डाकघर (IPO) /
   ई.एम.ओ. (EMO) :
   दिनांक :

स्थान :

दिनांक : चंदा भरनेवाले का हस्ताक्षर

- वार्षिक चंदा : रु.240/-, जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) : रु.2,400/- 'प्रधान संपादक, ति.ति.दे., तिरुपति' के नाम से मांगड्राफ्ट लेकर निम्न सूचित पते पर भेज सकते हैं।
- नवीन चंदादार या चंदा का पुनरुद्धार करनेवाले इस पत्र के कूपन को काटकर, एक कागज पर चंदादार को अपने पूरे विवरण के साथ सुस्पष्ट लिखकर निम्न पते पर भेजना चाहिए।

प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
दूसरा मंजिल, ति.ति.दे.प्रेस, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507. तिरुपति जिला, (आं.प्र)

धोखा मत खाओ!

हमारी दृष्टि में आया है कि कुछ लोग 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका की सदस्यता के लिए यह कह कर राशि वसूल करने में मग्न हैं कि वे श्री बालाजी के दर्शन, प्रसाद आदि की व्यवस्था करेंगे। ऐसे लोगों पर विश्वास न करें। उनसे सावधान रहें।

श्री बालाजी के दर्शन और प्रसाद पाने केलिए 'सप्तगिरि' पत्रिका कार्यालय से कोई संपर्क न करें। क्यों कि उन से पत्रिका कार्यालय का कोई संबंध नहीं है। कृपया चंदादार अपना चंदा नकद को सीधा 'प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, ति.ति.दे., तिरुपति' पता को भेजना पडेगा।

ति.ति.देवस्थान ने सदस्यता राशि लेने के लिए किसी व्यक्ति को नियुक्त नहीं किया। अतिरिक्त राशि का भुगतान न करें। दलालों पर विश्वास मत करें।

STD Code: 0877

दूरभाष : 2264359,
2264543.

संपादक : 2264360

कॉल सेंटर नंबर :
2233333, 2277777.

मंत्र - ॐ नमो वेंकटेशाय

https://ttdevasthanams.ap.gov.in
इस वेबसैट से भी सप्तगिरि पत्रिका चंदा भर सकते है।

Printed by Sri P. Ramaraju, M.A., and Published by Dr.K. Radha Ramana, M.A., M.Phil., Ph.D., P.G. Dip. in Ephigraphy, Dip. in Yoga on behalf of Tirumala Tirupati Devasthanams and Printed and Published at Tirumala Tirupati Devasthanams Press, K.T.Road, Tirupati-517 507. Editor : Dr.V.G. Chokkalingam, M.A., Ph.D.

दि. 18-11-2024 को तिरुपति में स्थित ति.ति.दे. प्रशासनिक मैदान प्रांगण में अत्यंत वैभव से कार्तिक महादीपोत्सव को आयोजित किया। इस संदर्भ में ति.ति.दे. ई.ओ., जे.ई.ओ., बोर्ड सदस्य के साथ अधिकसंख्या में भक्तगण इस सामूहिक दीपाराधन में भाग लिया।

दि. 04-12-2024 को तिरुमल में भक्तों का क्यू लाइन और दुकान समुदाय केंद्र को जाँच करते हुए ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अध्यक्ष श्री बी.आर.नायडू जी और बोर्ड सदस्य श्री भानुप्रकाशरेड्डी।

दि. 22-11-2024 को तिरुमल में स्थित यात्रियों का आवास समुदाय केंद्र-3 में केंद्रीय लाकर काउण्टर विधान को ति.ति.दे. के ई.ओ. श्री जे.श्यामला राव, आई.ए.एस., और अतिरिक्त कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री सीएच.वेंकय्या चौदरी, आई.आर.एस., ने प्रारंभोत्सव किया।

दि. 29-9-2024 को ति.ति.दे. प्रशासनिक भवन समुदाय केंद्र के पास स्थित ति.ति.दे. हाऊसिंग सोसईटी हॉल में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सांकेतिक भाषा दिवस कार्यक्रम का दृश्य।

64वाँ अंतर्राष्ट्रीय दिव्यांग लोगों का दिनोत्सव के संदर्भ में ति.ति.दे. के द्वारा आयोजित सभा में भाषण देते हुए वक्त और इस संदर्भ में भाग लेते हुए कर्मचारि।

SAPTHAGIRI (HINDI) SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY Published by Tirumala Tirupati Devasthanams Printing on 25-12-2024 & Posting at Tirupati RMS Regd. with the Registrar of Newspapers for India under RNI No.10742/1957. Postal Regd.No.TRP/152/2024-2026 "LICENCED TO POST WITHOUT PREPAYMENT No.PMGK/RNP/WPP-04(2)/2024-2026" Posting on 5th of every month.

ईशानां जगतोऽस्य वेंकटपतेर्विष्णोः परांप्रेयसीं
तद्वक्षःस्थल नित्यवासरसिकां तत्क्षांति संवर्धिनीम्।
पद्मालंकृतपाणिपल्लवयुगां पद्मासनस्थांश्रियं
वात्सल्यादिगुणोज्ज्वलां भगवतीं वंदे जगन्मातरम्।।